किलोल

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 03, मार्च 2021

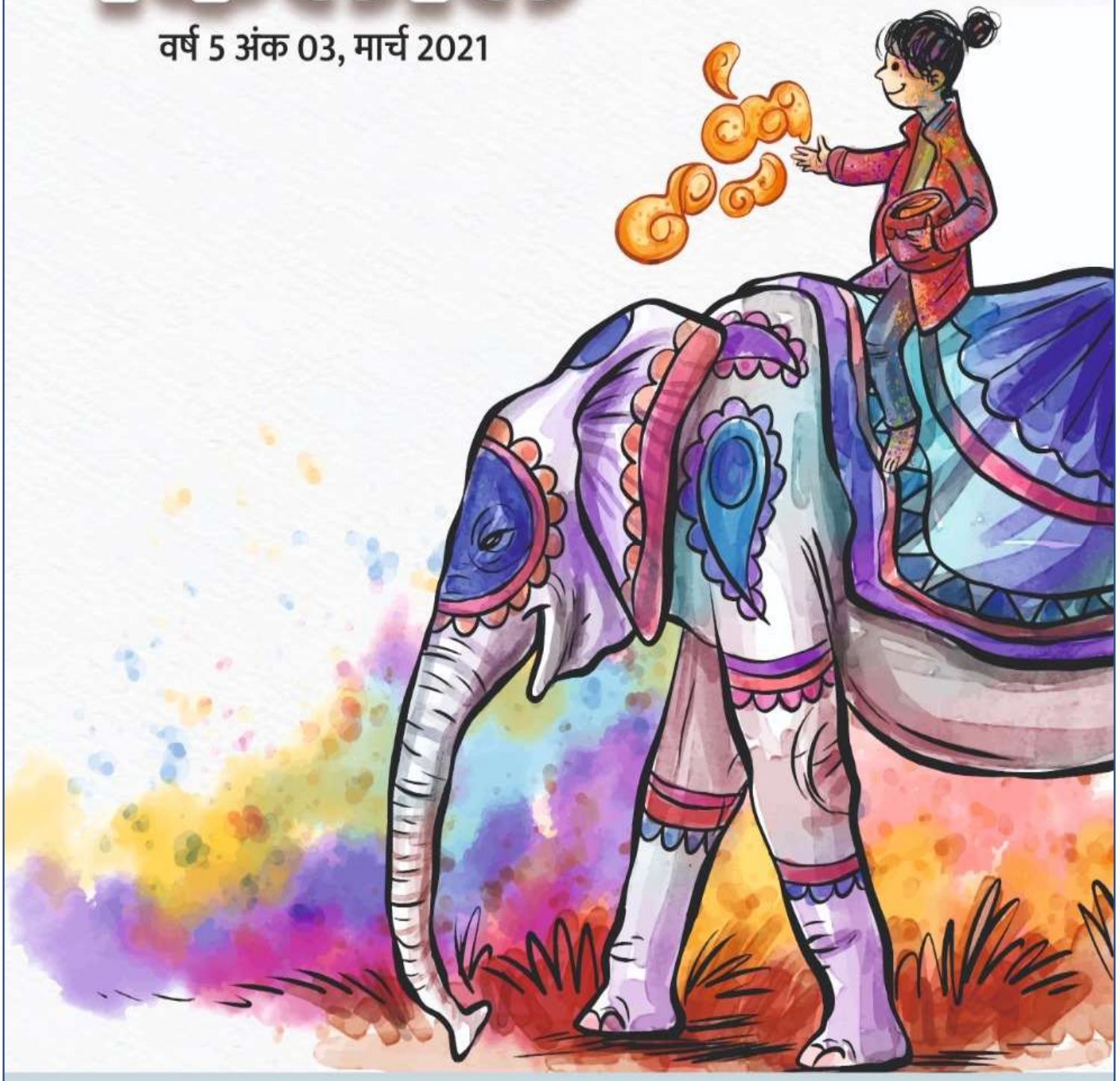

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्पित हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

वीणा वादिनी वर दो माँ 5

चिड़िया पीले पंखों वाली 7

पंचतंत्र की कथाएँ-वफादार नेवला 9

होली.....11

नई किताबें.....13

हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि पाणिनि 14

शारदे वंदन.....18

होरी आइस.....19

कोयल 20

कोई छोटा नहीं होता.....21

चिंटू गया बाजार 24

धूप 26

इस बार होली में.....28

आज के युग की नारी हूँ.....30

वृक्षों का उपकार.....32

रंगबिरंगी होली.....33

रानी चिड़िया.....37

मंज़िल करीब है 38

मटुकनाथ की चोरी 40

तितली बड़ी सयानी है.....42

तिरंगा.....44

अधूरी कहानी पूरी करो 45

प्रवीण की परेशानी 45

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' द्वारा पूरी की गई कहानी 47

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी.....48

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 49
टीचर जी! मुझे भी देखिए 49
बेटियाँ 51
काला कौवा 53
नटखट नन्ही 55
हिन्दी बोलो 56
हुड़दंग करें 57
चुलबुली 59
बन्दरों का शोर 61
भोजली पर्व 63
बर्फ 64
वसंत बहार हैं बच्चे 65
नोनी बेटी 66
पहेलियाँ 67
गुलाब 69
जैसे कुँवर कन्हैया 70
बेटियाँ 72
चित्र देख कर कहानी लिखो 74
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 75
रोशन की डायरी 75
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 77
शिक्षा 78
आलू पराँठा 80
पताल चटनी 81
मेहनत का फल 82
खाकर तुम्हें पचाना है 85

बचपन बड़ा प्यारा होता है 86
हमारे प्रेरणास्रोत- अहिल्याबाई होल्कर 88
O Fagoon! 90
क्या होते हैं शिक्षक 92
कँउआ बोलिस काँव-काँव 95
गोवा के 14 वर्षीय लियोन मेंडोंका भारत के नये ग्रैंडमास्टर 96
मातु शारदे 98
मेरा गाँव 100
बनाएँ रेल 102
मूर्ख कौवा 103
पद का मद 104
माँ 105
मानवता का व्यवहार 107
मेरा कलम 109
सफलता की कहानी- अब मुश्किल नहीं कुछ भी 110
आना चिड़िया 113
भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्गपहेली) 114

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चो एवं शिक्षक साथियो,

किलोल का यह अंक मैं उन सभी माताओं को समर्पित करता हूँ जो बच्चों को तैयार कर पढने भेजती हैं, उनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा का ध्यान रखती हैं. मार्च में महिला दिवस के उपलक्ष्य में हमें इन सभी महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को याद रखना है जो अपने अपने क्षेत्रों में अच्छा काम कर रही हैं. छत्तीसगढ़ में कुछ महिला शिक्षिकाओं ने स्वयं आगे आकर कक्षा दूसरी तक के बच्चों की माताओं को प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया है. इन महिला शिक्षिकाओं ने अभी तक बहुत सी माताओं को उनके छोटे बच्चों को घर पर सिखाने की शुरुआत कर दी है.

मुझे पूरा विश्वास है कि इस कार्य के बेहतर एवं दूरगामी परिणाम जल्दी ही सामने आने लगेंगे. छत्तीसगढ़ की माताएँ बच्चों की शिक्षा में ख़ास ध्यान देने एवं बच्चों को सीखने में सहयोग कर सकेंगी.

रंगों का त्योहार होली भी आने वाला है आप सभी को होली की भी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ. होली मनाते हुए स्वास्थ्य संबंधी सावधानियाँ रखना न भूलें.

आपका
आलोक शुक्ला

वीणा वादिनी वर दो माँ

रचनाकार- वृंदा पंचभाई

वीणा वादिनी वर दो माँ,
आलोकित जग कर दो माँ.

मन वीणा के तार छेड़ दो,
मुखरित यह जीवन कर दो माँ.

मेरे गीतों के हर स्वर में माँ,
नित तेरा ही आशीष रहे माँ.

तिमिर जग का दूर करो माँ,
जगमग यह जग कर दो माँ.

दुर्जन का संहार करो माँ,
सर्वत्र जग में शांति भरो माँ.

वीणा वादिनी वर दो माँ,
आलोकित जग कर दो माँ.

चिड़िया पीले पंखों वाली

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव, विदिशा

चिड़िया पीले पंखों वाली
आँखें छोटी भूरी-काली
देखे जब अंगूर गुलाबी
गुम हो गई अक्ल की चाबी

काले, हरे, पके-से पीले
खाए मीठे और रसीले
लेकिन ऐसे कभी न खाए
पहली बार नजर यह आए

बार-बार देखे ललचाए
बेचारी कुछ समझ न पाए
क्या वह इनको खा पाएगी!
या बिन खाए उड़ जाएगी?

पंचतंत्र की कथाएँ-वफादार नेवला

वर्षों पहले एक गाँव में देवदत्त नाम का ब्राह्मण अपनी पत्नी देवकन्या के साथ रहता था. विवाह के वर्षों बाद उन्हें संतान की प्राप्ति हुई. देवकन्या अपने बच्चे से बहुत प्रेम करती थी. एक दिन देवकन्या को अपने घर के बाहर नेवले का छोटा-सा बच्चा मिला. देवकन्या को उस पर दया आई, वो उसे घर ले आई और उसे अपने बच्चे की तरह ही पालने लगी.

ब्राह्मण की पत्नी अक्सर अपने पति के जाने के बाद बच्चे और नेवले दोनों को घर पर छोड़कर अपने काम पर चली जाती थी. नेवला इस दौरान बच्चे का पूरा ध्यान रखता था. दोनों के बीच अपार स्नेह देखकर देवकन्या बहुत प्रसन्न होती थी. समय बीतता गया और नेवले और ब्राह्मण के बच्चे के बीच का स्नेह प्रगाढ़ होता गया.

एक दिन ब्राह्मण अपने काम से कहीं गया हुआ था. पति के जाते ही देवकन्या भी अपने बच्चे को छोड़कर बाहर चली गई. इसी बीच उनके घर में एक साँप घुस आया. इधर, ब्राह्मण देवदत्त का पुत्र गहरी निद्रा में लीन था और उधर, साँप तेजी से उसकी ओर बढ़ने लगा. पास में ही नेवला भी था. जैसे ही नेवले ने साँप को देखा, वो सतर्क हो गया. नेवला तेजी से साँप की ओर लपका और दोनों के बीच देर तक संघर्ष हुआ. अंततः नेवले ने साँप को मारकर बच्चे की जान बचा ली. साँप को मारने के बाद नेवला घर के आँगन में बैठ गया.

जब देवकन्या घर लौटी. जैसे ही उसने नेवले का, साँप के रक्त से सना मुँह देखा, तो वह डर गई. वास्तविकता से अनभिज्ञ देवकन्या को लगा कि नेवले ने उसके प्यारे बेटे की हत्या कर दी है. यही विचार कर ब्राह्मण की पत्नी ने एक लाठी उठाई और नेवले को पीट-पीटकर मार डाला.

नेवले को मारने के बाद ब्राह्मणी तेजी से घर के अंदर भागी. वहाँ बच्चा हँसता हुआ खिलौनों से खेल रहा था. अब देवकन्या की नजर पास में मरे पड़े साँप पर पड़ी. साँप को देखते ही देव कन्या को पूरी बात समझ में आई. अब उसे बहुत पश्चाताप हुआ. वो भी नेवले से बहुत प्यार करती थी, लेकिन क्षणिक क्रोधवश उसने बिना विचार किए नेवले को मार दिया था. देवकन्या जोर-जोर से रोने लगी, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी.

उसी समय ब्राह्मण भी घर लौट आया. वह पत्नी के रोने की आवाज सुनकर दौड़ता हुआ घर के अंदर आया. उसने पूछा, “देवकन्या तुम क्यों रो रही हो, ऐसा क्या हो गया?” देवकन्या ने सारा वृत्तांत बताया. नेवले की मृत्यु की बात सुनकर ब्राह्मण देवदत्त को भी बहुत दुःख हुआ. दुःखी मन से ब्राह्मण ने कहा, “तुम्हें तुम्हारे अविश्वास का यह दण्ड मिला है.”

इसीलिए कहा जाता है कि बिना पूर्ण सत्य जाने किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहिए.

होली

रचनाकार- सपना यदु

होली आई होली आई,
रंगों की बौछारें लाई.
उड़े गुलाल चले पिचकारी,
धमा चौकड़ी खूब मचाई.

फागुन पूर्णिमा दिवस में भाई,
देखो सब ये फाग है आई.
बसंत भी संग झूम रहे हैं,
टेसू के फूलों ने ली अंगड़ाई..

बच्चे हो जाते रंग-बिरंगी,
लाल, पीले, हरे, गुलाबी.
झूम-झूम कर नाच रहे हैं,
ठाठ है देखो इनके नवाबी..

ढोल बाजे, नगाड़ा बाजे.
सज-धज कर लोग डंडा नाचे..

गुजिया, बर्फी, पेड़े बनते,
बताशे की हार पहनते.
भूल कर सभी गिले-शिकवे
आपस में सब गले है मिलते..

नई किताबें

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत,

रंग-बिरंगी चित्रों वाली,
छपकर आयी नई किताबें.

देखो लल्लू उलट-पलटकर,
कविता वाली नई किताबें.

लाल टमाटर, जामुन काला,
चित्रों वाली नई किताबें.

हंसी-ठहाके खेल-खेल में,
हंसने वाली नई किताबें.

पढ़-लिखकर खुश रहें हमेशा,
पढ़ने वाली नई किताबें.

हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि पाणिनि

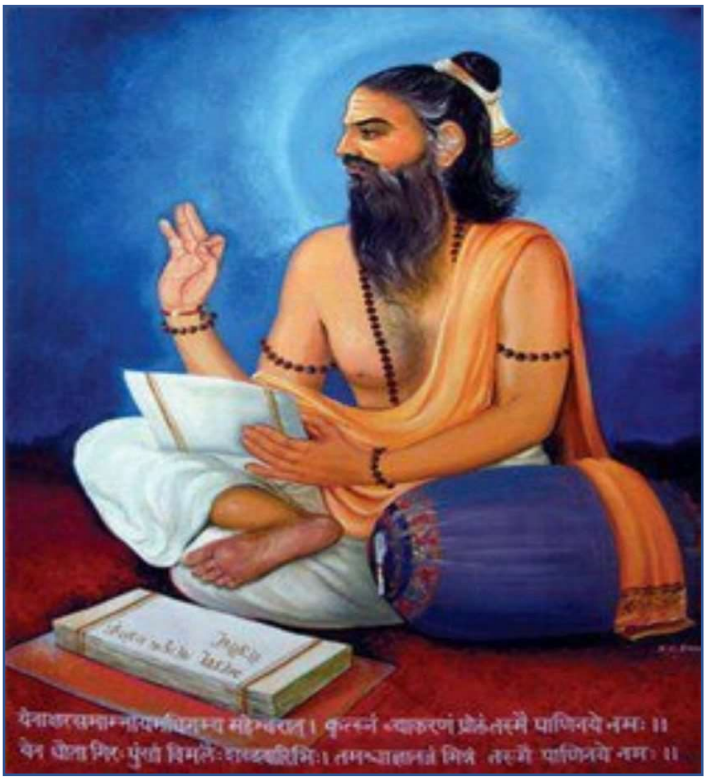

पाणिनि (५०० ई पू) संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण हुए हैं. इनका जन्म तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के गांधार में हुआ था. इनके ग्रंथ का नाम अष्टाध्यायी है जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं. संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय है. अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण का ग्रंथ नहीं है बल्कि इसमें तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता है. उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन, दार्शनिक चिंतन, ख़ान-पान, रहन-सहन आदि के प्रसंग स्थान-स्थान पर अंकित हैं.

पाणिनि का जन्म शलातुर ग्राम में हुआ था. जहाँ काबुल नदी सिंधु में मिली है उस संगम से कुछ मील दूर यह गाँव था. उसे अब लहुर कहते हैं. अपने जन्मस्थान के अनुसार पाणिनि शालातुरीय भी कहे गए हैं. अष्टाध्यायी में स्वयं उन्होंने इस नाम का उल्लेख किया है. पाणिनि के गुरु उपवर्ष पिता पणिन और माता का नाम दाक्षी था.

पाणिनि से पहले शब्दविद्या के अनेक आचार्य हो चुके थे. उनके ग्रंथ पढ़कर और उन ग्रंथों के परस्पर भेदों को देखकर पाणिनि के मन में व्याकरणशास्त्र को व्यवस्थित करने का विचार

आया. पाणिनि से पूर्व वैदिक संहिताओं, शाखाओं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि का जो विस्तार हो चुका था उस वाङ्मय से उन्होंने अपने लिये शब्दसामग्री ली जिसका उन्होंने अष्टाध्यायी में उपयोग किया है. दूसरे निरुक्त और व्याकरण की जो सामग्री पहले से थी उसका उन्होंने संग्रह और सूक्ष्म अध्ययन किया. इसका प्रमाण भी अष्टाध्यायी में है, जैसा शाकटायन, शाकल्य, भारद्वाज, गार्ग्य, सेनक, आपिशलि, गालब और स्फोटायन आदि आचार्यों के मतों के उल्लेख से ज्ञात होता है.

अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं. पहले दूसरे अध्यायों में संज्ञा और परिभाषा संबंधी सूत्र हैं एवं वाक्य में आए क्रिया और संज्ञा शब्दों के पारस्परिक संबंध के नियामक प्रकरण भी हैं, जैसे क्रिया के लिए आत्मनेपद-परस्मैपद-प्रकरण, एवं संज्ञाओं के लिए विभक्ति, समास आदि. तीसरे, चौथे और पाँचवें अध्यायों में सभी प्रकार के प्रत्ययों का विधान है. तीसरे अध्याय में धातुओं में प्रत्यय लगाकर कृदंत शब्दों का निर्वचन है और चौथे तथा पाँचवे अध्यायों में संज्ञा शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बने नए संज्ञा शब्दों का विस्तृत निर्वचन बताया गया है.

ये प्रत्यय जिन अर्थविषयों को प्रकट करते हैं उन्हें व्याकरण की परिभाषा में वृत्ति कहते हैं, जैसे वर्षा में होनेवाले इंद्रधनु को वार्षिक इंद्रधनु कहेंगे. वर्षा में होनेवाले इस विशेष अर्थ को प्रकट करनेवाला "इक" प्रत्यय तद्धित प्रत्यय है. तद्धित प्रकरण में 1,190 सूत्र हैं और कृदंत प्रकरण में 631. इस प्रकार कृदंत, तद्धित प्रत्ययों के विधान के लिए अष्टाध्यायी के 1,821 अर्थात् आधे से कुछ ही कम सूत्र विनियुक्त हुए हैं.

पाणिनि ने अपने समय की संस्कृत भाषा का सूक्ष्म विश्लेषण किया और इसके आधार पर उन्होंने व्याकरण शास्त्र का प्रवचन किया, वह न केवल तत्कालीन संस्कृत भाषा का नियामक शास्त्र बना, अपितु उसने आगामी संस्कृत रचनाओं को भी प्रभावित किया. पाणिनि से पूर्व भी व्याकरण शास्त्र के अन्य आचार्यों ने संस्कृत भाषा को नियमों में बाँधने का प्रयास किया था, परन्तु पाणिनि का शास्त्र विस्तार और गाम्भीर्य की दृष्टि से इन सभी का सिरमौर सिद्ध हुआ.

पाणिनि ने अपनी गहन अन्तर्दृष्टि, समन्वयात्मक दृष्टिकोण, एकाग्रता, कुशलता, दृढ़ परिश्रम और विपुल सामग्री की सहायता से जिस अनूठे व्याकरण शास्त्र का उपदेश दिया, उसे देखकर बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्य चकित होकर कहने लगे - 'पाणिनीयं महत्सुविरचितम्' - पाणिनि का शास्त्र महान और सुविरचित है; 'महती सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य' उनकी दृष्टि अत्यन्त पैनी है; 'शोभना खलु पाणिनेः सूत्रस्य कृतिः' उनकी रचना अति सुन्दर है; 'पाणिनिशब्दो लोके प्रकाशते' सारे लोक में पाणिनि का नाम छा गया है, इत्यादि. भाष्यकारों ने पाणिनि को प्रमाणभूत आचार्य, माङ्गलिक आचार्य, सुहृद्, भगवान आदि विशेषणों से सम्बोधित किया है.

उनके अनुसार पाणिनि के सूत्रों में एक भी शब्द निरर्थक नहीं हो सकता. उन्होंने जो सूत्र बनाए हैं, वे बहुत सोच विचार कर बनाए गए हैं. उन्होंने सुहृद् के रूप में व्याकरण शास्त्र का अन्वाख्यान किया है. रचना के समय उनकी दृष्टि भविष्य की ओर थी और वह दूर की बात सोचते थे. इस प्रकार उनकी प्रतिष्ठा बच्चे-बच्चे तक फैल गई और विद्यार्थियों में उन्हीं का व्याकरण सर्वाधिक प्रिय हुआ.

19वी सदी में यूरोप के एक भाषा विज्ञानी फ्रेंज बोप्प ने पाणिनि के कार्यो पर शोध किया. उन्हें पाणिनि के ग्रंथों में तथा संस्कृत व्याकरण में आधुनिक भाषा प्रणाली को और परिपक्व करने के नए मार्ग मिले. इसके बाद संस्कृत के कई विदेशी विद्वानों ने उनके कार्यो में रूचि दिखाई और गहन अध्ययन किया.

व्याकरणशास्त्र में पाणिनि ने नैरुक्त एवं गार्ग्य सम्प्रदायों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया. नैरुक्त संप्रदाय एवं शाकटायन के अनुसार, संज्ञावाचक शब्द धातुओं से ही बने हैं. गार्ग्य तथा दूसरे वैय्याकरणों का मत इससे कुछ भिन्न था. उनका कहना था, खींचतान करके प्रत्येक शब्द को धातुओं से सिद्ध करना उचित नहीं हैं. पाणिनि ने 'उणादि'शब्दों को अव्युत्पन्न माना है, तथा धातु से प्रत्यय लगाकर, सिद्ध हुये शब्दों को 'कृदन्त'प्रकरण में स्थान दिया है.

पाणिनि के अनुसार, 'संज्ञाप्रमाण' एवं 'योगप्रमाण' दोनों अपने अपने स्थान पर इष्ट एवं आवश्यक हैं. शब्द से जाति का बोध होता है या व्यक्ति का, इस संबंध में भी पाणिनि ने दोनों मतों को समयानुसार मान्यता दी है. धातु का अर्थ 'हो' अथवा 'भाव' हो, यह भी एक प्रश्न आता है. पाणिनि ने दोनों को स्वीकार किया है.

पाणिनि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' की रचना गणपाठ, धातृपाठ, उणादि, लिंगानुशान तथा फिटसूत्र ये ग्रंथों का आधार ले कर की है. उच्चारण-शास्त्र के लिये अष्टाध्यायी के साथ शिक्षा ग्रंथों के पठन-पाठन की भी आवश्यकता रहती है. पाणिनि प्रणीत व्याकरणशास्त्र में इन सभी विषयों का समावेश होता है.

परस्पर भिन्न होते हुए भी व्याकरण के एक नियम के अंतर्गत आ जानेवाले शब्दों का संग्रह 'गणपाठ' में समाविष्ट किया गया है. गणपाठ में संग्रहीत शब्दों का अनुक्रम प्रायः निश्चित रहता है. गण में छोटे छोटे नियमों के लिये अंतर्गतसूत्रों का प्रणयन भी दिखलायी पडता है. गणपाठ की रचना पाणिनिपूर्व आचार्यो द्वारा की गयी होगी. फिर भी वह पाणिनि व्याकरण का महत्त्वपूर्ण अंग है.

अंग्रेज़ी में ऐसा कोई वाक्य नहीं जिसके प्रत्येक शब्द का 800 धातुओं से एवं प्रत्येक विचार का पाणिनि द्वारा प्रदत्त सामग्री के सावधानीपूर्वक वेश्लेषण के बाद अविशष्ट 121 मौलिक संकल्पनाओं से सम्बन्ध निकाला न जा सके.

आज दुनिया भर में कंप्यूटर वैज्ञानिक मानते है कि आधुनिक समय में संस्कृत व्याकरण कंप्यूटर की सभी समस्याओं को हल करने में सक्षम है. अष्टाध्यायी में विभक्ति-प्रधान संस्कृत भाषा के 4000 सूत्र बहुत ही वैज्ञानिक और तर्कसिद्ध ढंग से संगृहीत हैं.

नासा के वैज्ञानिक श्री रिक ब्रिग्स ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) और पाणिनी व्याकरण के बीच की शृंखला की खोज की है. इस खोज के पहले भाषाओं को कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाना बहुत कठिन कार्य था.उसके बाद इस प्रोजेक्ट पर कई देशों के साथ करोड़ों डॉलर खर्च किये गये.

पाणिनीय व्याकरण पर आधुनिक समय के विद्वानों के विचार

"पाणिनीय व्याकरण मानवीय मष्तिष्क की सबसे बड़ी रचनाओं में से एक है" **प्रोफेसर टी. शेरवात्सकी**

"पाणिनीय व्याकरण की शैली अतिशय-प्रतिभापूर्ण है और इसके नियम अत्यन्त सतर्कता से बनाये गये हैं"**कोल ब्रुक.**

"संसार के व्याकरणों में पाणिनीय व्याकरण सर्वशिरोमणि है... यह मानवीय मष्तिष्क का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अविष्कार है" **(सर डब्ल्यू. डब्ल्यू. हण्डर).**

"पाणिनीय व्याकरण उस मानव-मष्तिष्क की प्रतिभा का आश्चर्यतम नमूना है जिसे किसी दूसरे देश ने आज तक सामने नहीं रखा". **(प्रो. मोनियर विलियम्स)**

महर्षि पाणिनि के संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप प्रदान के अतुल्य योगदान के लिए संसार उन्हें सदैव स्मरण करेगा.

शारदे वंदन

रचनाकार- स्व. महेंद्र देवांगन "माटी"

चरण कमल में तेरे माता, अपना शीश झुकाते हैं.
ज्ञान और बुद्धि देने वाली, तेरे ही गुण गाते हैं..

श्वेत कमल में बैठी माता, कर में पुस्तक रखती.
राजा हो, या रंक सभी का, किस्मत तू ही लिखती..

वीणा की झंकार सुनकर, ताल कमल खिल जाते हैं.
बैठ पुष्प में तितली रानी, भौंरे गाना गाते हैं..

मधुर-मधुर मुस्कान बिखेरे, ज्ञान-बुद्धि तू देती है.
शब्द- शब्द में बसने वाली, सब कुमति हर लेती है..

मैं अज्ञानी बालक माता, शरण तुम्हारी आया हूँ.
झोली भर दे मेरी मैया, शब्द पुष्प मैं लाया हूँ..

होरी आइस

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

होरी आइस, होरी आइस
रंग-गुलाल धर होरी आइस.

धरौ हाथ मा सब पिचकारी
डारौ रंग सब बारी-बारी.

लइका, बुढ़ुवा जम्मो जवान
बन जावौ जी सब झन मितान.

छोटे - बड़े के भेद भुलावौ
हाँसो - गावौ खुशी मनावौ.

जात-पात, मजहब के भैया
नइ हे इहाँ कौनो पुछइया.

कोयल

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

कोयल काली होती लेकिन, मधु रस घोलें बोल.
उसकी मधुमय वाणी समझो, सचमुच है अनमोल.

जब-जब मधु रितु है आती तब-तब, कोयल है गाती.
अपनी मीठी वाणी से वह, दिल है जीत लेती.

मीठी वाणी की महिमा का, पाठ हमें समझाती.
जब भी बोलो मधुरस घोलो, बात यही बतलाती.

रंग रूप की नहीं सदा ही, गुण की होती पूजा.
कोयल जैसा मीठा बोले, और नहीं है दूजा.

हम भी यह संकल्प आज लें, मीठा ही बोलेंगे.
सुनने वालों के कानों में, मिसरी सी घोलेंगें.

कोई छोटा नहीं होता

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

चिंटू चूहा पास के आम वृक्ष के नीचे खेल रहा था. साथ में उसके दोस्त मिंटू और बिट्टू भी थे. वे सभी अपने खेल में ऐसे मग्न थे कि उन्हें आसपास क्या हो रहा है, पता ही नहीं था. बहुत समय बीत जाने के बाद चिंटू ने देखा कि पास में ही पिंटी गिलहरी चित्रकारी कर रही है. वह चित्र बना रही है. पिंटी के हाथ में रंग-ब्रश देखकर चिंटू को हँसी आ गई.

चिंटू ने हँसते हुए कहा, "पिंटी चित्रकार को चिंटू चूहे का प्रणाम. हम आपके दर्शन पाकर धन्य हुए." पिंटी को चिंटू का इस प्रकार उपहास करना अच्छा नहीं लगा. लेकिन उसकी बातों पर बिना ध्यान दिए वह अपने काम में लगी रही. जब पिंटी ने किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तब चिंटू ने फिर कहा, "हमारा भी एक चित्र बना दो, चित्रकार मैडम." और फिर हँसने लगा.

पिंटी कुछ कहे बिना चिंटू का राक्षस नुमा चित्र बनाकर रख दी. चिंटू अपना चित्र देखकर खूब नाराज हुआ. वह पिंटी से लड़ने लगा. चिंटू की जोर-जोर की आवाज़ को सुनकर मिंटू और बिट्टू भी आ गए.

उन्होंने चिंटू से उसके नाराज होने का कारण पूछा तो चिंटू ने पिंटी द्वारा बनाया अपना चित्र दिखा दिया. चिंटू का चित्र देख कर उन्हें भी हँसी आ गई.

बिट्टू ने मजाकिये लहजे में कहा, "अरे, यह तो तुम्हारे ही तरह ही दिख रहा है, किसने बनाया?"

बिट्टू का इस तरह कहना तो आग में घी डालने का काम किया. वह तो और अधिक आग बबूला हो गया. बिट्टू को भी अनाप-शनाप कहने लगा. बात को बिगड़ते देखकर मिंटू ने कहा, "अरे भाई, इस तरह चिल्लाते रहोगे कि कुछ बतलाओगे भी. तुम कुछ बतलाओगे तो हम समझें."

चिंटू ने पिंटी के तरफ इशारा करते हुए कहा, "मैंने इससे मेरा चित्र बनाने के लिए कहा तो इसने मेरा यह चित्र बना दिया, बिल्कुल राक्षस की तरह."

मिंटू ने कहा, "फिर तो यह गलत है भाई, पिंटी को ऐसा मजाक नहीं करना चाहिए."

तब पिंटी ने कहा, भाई, मेरी भी बात सुन लो. मैं तो किसी से कुछ कहे-बोले बिना अपना काम कर रही थी. यह आकर मुझे ताने देने लगा और कहा, "पिंटी चित्रकार को चिंटू चूहे का प्रणाम. हम आपके दर्शन पाकर धन्य हुए. और इस प्रकार उपहास करते हुए अपना चित्र बनाने के लिए कहा तो मैंने भी इसका यह चित्र बना दिया. आज तक इसने किसी से प्रेम पूर्वक व्यवहार किया है क्या? हर किसी को चिढ़ाना ही इसका काम रहा है. ये पहले अपनी आदत तो सुधारे." पिंटी की बात में दम था. वास्तव में चिंटू हर किसी का मजाक बनाता रहता था. जब पिंटी ने अपनी पूरी बात रखी तो उन्हें मामला समझ में आया कि इसके लिए चिंटू ही जिम्मेदार है.

मिंटू ने भी पिंटी का पक्ष लेते हुए कहा, "फिर तो पिंटी ने ठीक किया है चिंटू भाई. हम भले ही तुम्हारे दोस्त हैं लेकिन तुम्हें मानना होगा, तुम्हारा व्यवहार उचित नहीं था. हरदम किसी का मजाक नहीं बनाना चाहिए.फिर तुम्हारी इस तरह बहुत शिकायत है."

चिंटू ने कहा, " अब तो तुम लोग मुझे ही दोषी ठहराने लगे. क्या कोई कभी मेरा मजाक नहीं उड़ाता है? मैंने तो कभी किसी से कुछ नहीं कहा."

बात कल की नहीं है बात आज की है. आज तो तुमने गलती की है और गलती की है तो मानने में क्या हर्ज़ है.

चिंटू को भी अपनी गलती का अहसास होने लगा. वह बहुत देर तक सिर झुकाए खड़े रहा.

बिट्टू अब तक सबकी बातें चुपचाप सुन रहा था. चिंटू को सिर झुकाए देखकर उसने कहा, "चिंटू इस तरह सिर झुकाए खड़े रहने से कुछ नहीं होता. तुम्हें अपनी गलती का अहसास है तो पिंटी को सॉरी बोलो और बात यहीं समाप्त करो. अपनी गलती मान लेने से कोई छोटा नहीं हो जाता."

चिंटू ने बिट्टू की बात मान ली और पिंटी को सॉरी कहा तथा भविष्य में अपनी गलती न दोहराने की शपथ ली. अब सभी खुश थे. पिंटी झट से चिंटू का एक सुंदर चित्र बनाकर दे दी.

चिंटू गया बाजार

रचनाकार- कन्या कुमारी पटेल

चिंटू गया बाज़ार, दादा के कंधे पे होके सवार.
चिंटू था खुश बड़ा, सोचा खाऊंगा समोसा बड़ा.
पहुंच गया होटल के पास, दादा जी को लेकर साथ.
होटल में था समोसा, भजिया, जलेबी, बड़ा.
रसगुल्ला, आलू गुंडा, चिंटू देख रहा था खड़ा.
समोसा बोला खा लो मुझको.
मैं तो बहुत नमकीन हूँ,
तेल में छनकर निकला हूँ
मैं बड़ा स्वादिष्ट हूँ.

चिंटू हुआ खाने को तैयार, तभी सुना कुछ और आवाज.
पास में था फलों का ठेला, ताजा-ताजा फलों का रेला.
बोल रहे थे देखो भाई, हम तो हैं विटामिनों का मेला.
फिर क्यों खाते हैं सब तेलों का सामान छना.
जो पहुंचाता है शरीर को नुकसान सदा
फलों को जब तुम खाओगे, अपनी सेहत बनाओगे.
तब चिंटू ने बदला रास्ता, होटल छोड़ गया ठेले पर.
लेकर केला, सेब, संतरा, दादा के संग घर को चला.

धूप

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

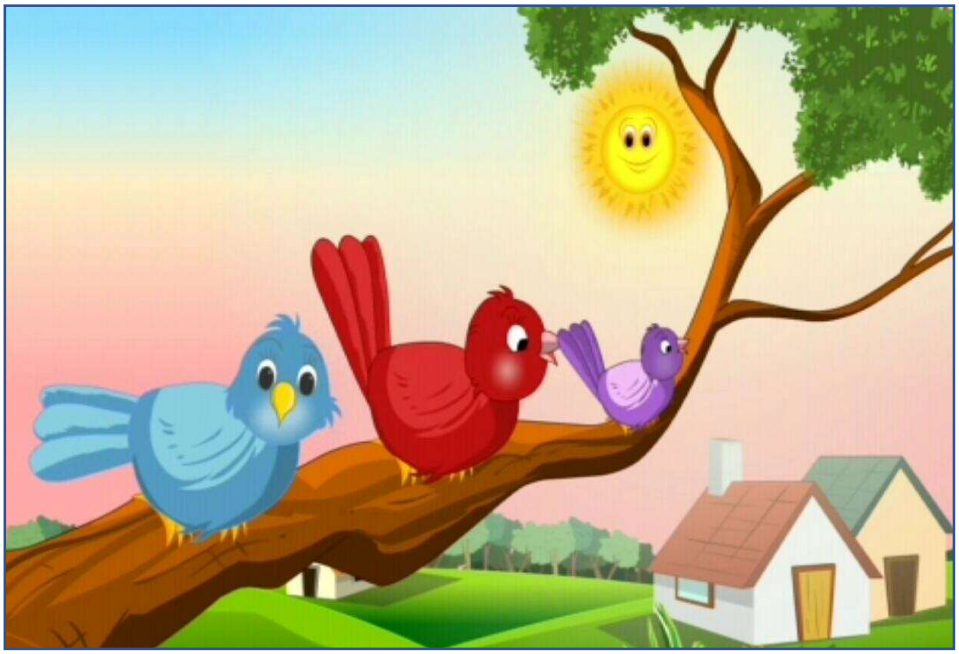

लगती प्यारी-प्यारी धूप.
खिली-खिली-सी न्यारी धूप.

पहनो दस ऊनी कपड़े.
दूर करो सर्दी के लफड़े.
काँप रहा तन थर-थर-थर.
कोड़ा मारे शीतलहर.

बिछी हुई स्वर्णिम आभा.
सरसों की है क्यारी धूप.

जाग सुबह, मुस्काती है.
झट छत पर चढ़ जाती है.
कोहरा - धुंध हटाती है.
आँगन में इठलाती है.

हँसकर गर्माहट देती.
मार रही किलकारी धूप.

बर्फ पहाड़ों पर बरसे.
सूरज आने को तरसे.
बादल लुका-छिपी खेलें.
ठिठुरन महाशीत झेलें.

पशु-पक्षी भी मग्न हो गए.
पाकर बड़ी दुलारी धूप.
लगती प्यारी-प्यारी धूप.

इस बार होली में

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला"

होली की पूरी तैयारी हो चुकी थी. पापा बच्चों के लिए रंग-गुलाल पिचकारी सभी कुछ ले आये थे. शिखा पिचकारी पाकर बहुत खुश थी. उसे होली का बेसब्री से इंतजार था; लेकिन शिखर को बोतलनुमा पिचकारी पसंद नहीं थी. उसने सोचा, क्यों न मैं बाँस की पिचकारी बना लूँ; और वह एक बाँस के टुकड़े को पिचकारी रूप देने में लग गया.

इधर शिखा ने देखा कि नल में पानी आने लगा है तो वह नहाने चली गई. पर उसने देखा कि नल में से पानी बहुत कम आ रहा है. उसे लगा कि टोंटी में कुछ फँसा हुआ है. मम्मी को बुलाया फिर दोनों ने कोशिश की और टोंटी से कुछ पॉलीथिन के टुकड़े निकाले तब नल से पानी अच्छी तरह आने लगा. अब तक शिखर की पिचकारी भी बनकर तैयार हो गयी. उसे भूख लगी थी.

खाना बनने में अभी थोड़ी देर थी तो उसने पापा के लाए फल खाने की सोची.पर यह क्या? फल तो पॉलीथिन बैग में रखे रखे खराब हो चुके थे, उनसे दुर्गंध भी आ रही थी. उसने मम्मी को बताया तो मम्मी बोलीं कि पॉलीथिन में रखे रह जाने के कारण ही फल इतनी जल्दी खराब हो गये हैं. होली के दिन सुबह से ही पूरी कॉलोनीमें चहल-पहल शुरू हो गई थी. शिखर और शिखा अपनी-अपनी पिचकारी लेकर खूब मस्ती कर रहे थे.

इधर पापा के दोस्त भी होली पर बधाई देने घर आए हुए थे. ड्राइंगरूम में बैठे इधर-उधर की बातें चल रहीं थीं बातों बातों में पॉलीथिन के विषय पर चर्चा होने लगी. पापा के दोस्त बोले "पॉलीथिन के उपयोग पर हमारी सरकार ने बैन लगा दिया है, जो पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से बिल्कुल सही है."

लेकिन शिखर और शिखा के पापा का कहना था कि पॉलीथिन रोज के कामों में बहुत उपयोगी है. इससे कई काम आसान हो जाते हैं.

पापा के दोस्त ने बताया कि पॉलीथिन ऐसा केमिकल प्रोडक्ट है जो पुराना होने या फटने पर भी न तो सड़ता-गलता है और जलाने पर जहरीली गैस बनाते हुए जलता है. कचरे के रूप में फेंकने पर इसका ढेर लग जाता है. इसमें फँसे खाद्य पदार्थों से दुर्गंध निकलती है जो वायुमंडल के लिए नुकसानदेह है. चारा ढूँढ़ते हमारे गाय बैल, भैंस इसे खा लेते हैं जिससे इनकी जान जोखिम में पड़ जाती है. पॉलीथिन पड़ी जगह पर घास तक नहीं उगती. जमीन बंजर हो जाती है. इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है."

" हाँ...हाँ....अंकल, आप सही कह रहे हैं. बहुत ही बेकार चीज है ये पॉलीथिन ", शिखा ने नल में पॉलीथिन फँसने और चीकू-केले के सड़ने वाली बात बताते हुए कहा. अब शिखर भी बोल पड़ा - "और अंकल ! कल एक लड़की पॉलीथिन के पैकेट में तेल खरीदकर ले जा रही थी. पैकेट का मुँह ठीक से नहीं था, सारा तेल जमीन पर गिर गया. वो बेचारी रोने लगी."

अब तो पापा को भी पॉलीथिन के नुकसान याद आने लगे, बोले "अरे हाँ लेबर कॉलोनीमें बरसात के दिनों में नालियों में पॉलीथिन फँसने से पानी सड़कों पर आ जाता है. कई कच्चे मकान गिर जाते हैं. पॉलीथिन का यूज़ नहीं, बल्कि मिसयूज़ ज्यादा होता है." अब तो सभी ने पॉलीथिन का उपयोग न करने पर जोर दिया. इस बार पॉलीथिन का उपयोग नहीं करते हुए पर्यावरण को बचाने का संकल्प होली का शुभ संदेश रहा.

आज के युग की नारी हूँ

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

उड़ चली हूँ नीलगगन में
कदम रख दिया मैंने चांद में,
मैं आज के युग की नारी हूँ
सर रख दूँ शेर की "माँद" में.

मुट्ठी में है किस्मत मेरी
सीने में ज्वाला रखती हूँ,
अबला समझ के ना टकराना
हौसला बुलंद रखती हूँ,
मैं आज के युग की नारी हूँ.

संग-संग अपने कर सकती हूँ
हर प्राणी की रक्षा...,
मैं चाहूँ तो बदल के रख दूँ
जीवन का हर नक्शा,
सौ-सौ पर भी भारी हूँ
मैं आज के युग की नारी हूँ.

शून्य से साकार तक
दुनिया के विस्तार तक,
मेरा ही बजेगा डंका
मैं चाहूँ तो भस्म करा दूँ ,

रावण की भी लंका.
मैं सीता संस्कारी और
क्रोध, कालिका अवतारी हूँ.
मैं आज के युग की नारी हूँ.

वृक्षों का उपकार

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

स्वयं गरल पीकर, हमको देती शुद्ध हवाएँ.
इनकी शीतल छाया, हर तपते मन को भाये..

जड़ी -बूटी की खान, है जीवन के लिए वरदान.
पंछियों का बसेरा यहीं, वृक्ष होते सच में महान..

इनकी छाया सुखदायी, देते हमको ऑक्सीजन.
वर्षा से हरियाली आती, मेघों को देते निमंत्रण..

वृक्षों की न करो कटाई, हैं ये जीवन के आधार.
बंजर भूमि की जान वृक्ष, करते धरती के श्रृंगार..

ना भूले वृक्षों का उपकार, आओ करे वृक्षारोपण.
बाढ़-सूखे से हमें बचाती, दूर करते वायु प्रदूषण..

रंगबिरंगी होली

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला

घर में हड़कंप बचा हुआ था. आठ बरस की नन्ही मुस्कान आगे-आगे भाग रही थी और दादा-दादी मम्मी-पापा उसके पीछे-पीछे. आखिर दादी हाँफते हुए बोली-"रूक जा बेटा, क्या मेरा घुटना तुड़वाकर ही मानेगी?"

मुस्कान खिलखिलाकर हँस दी और ठुमकते हुए बोली-"दादी आप सब मेरे पीछे क्यों पड़े हो? मैं होली नहीं खेलूँगी."

"अरे बिटिया, होली मत खेलना पर कम से कम अपनी नई फ्रॉक तो बदल ले. अभी तेरे दोस्त आएँगे और तुझे रंग से सराबोर कर देंगे."

"पर....ये तो मेरी पसंदीदा गुलाबी फ्रॉक है.." मुस्कान बोली.

माँ थोड़े गुस्से से पिताजी की ओर देखते हुए बोली-"मैं पहले ही आपसे कह रही थी कि इतनी सुंदर फ्रॉक आज होली के दिन इसे सुबह-सुबह मत पहनाइये, वरना ये बदलेगी ही नहीं."

दादा जी अपना चश्मा ठीक करते हुए बोले-"अरे हम अपनी रानी गुड़िया को और अच्छी फ्रॉक दिलवाएँगे."

मुस्कान ने दादाजी की ओर देखकर पूछा-"पक्का दिलवाओगे ना आप?"

"हाँ..बिलकुल पक्का." दादाजी ने प्यार से कहा.

"ठीक है" कहते हुए मुस्कान ने मम्मी की तरफ़ अपने नन्हे हाथ फैला दिए मम्मी ने उसे प्यार से गोद में उठाया और कमरे में चली गई.

थोड़ी देर बाद मुस्कान अपनी पुरानी फ्रॉक पहने तैयार थी, जिस पर पहले से ही थोड़ा-थोड़ा रंग लगा हुआ था. मुस्कान ने देखा कि दादाजी ने दादी के चेहरे पर पीला और गुलाबी गुलाल लगाया और दादी दादाजी के माथे पर हरे गुलाल से तिलक कर रही थी. मुस्कान को ये देखकर बहुत अच्छा लगा. उसका मन हुआ कि वो भी मुट्ठी भर गुलाल लेकर सबके ऊपर उड़ा दे, पर सब उसको देखकर भी अनदेखा कर रहे थे.

मुस्कान से अब रूका नहीं जा रहा था इसलिए वो दादाजी के पास जाकर बोली-"मुझे रंगों से डर लगता है. मैं होली नहीं खेलूँगी और मैं पक्का बता दे रही हूँ अगर किसी ने भी मुझ पर रंग डालने की कोशिश की तो मैं सबसे कट्टी हो जाऊँगी."

"नहीं, नहीं..हममें से कोई भी तुम्हें रंग नहीं लगाएगा" कहते हुए मम्मी मुस्कुरा दीं.

मुस्कान ने सोचा था कि मम्मी उसकी मान मनव्वल करेंगी, प्यार से दुलारेंगी और जबरदस्ती उसके मुँह पर ढेर सारा रंग पोत देंगी, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ.

मुस्कान ने मम्मी की तरफ देखा जो पापा के साथ गुलाल की थाली सजा रही थी. मुस्कान चुपचाप जाकर खिड़की के पास खड़ी हो गई थोड़ी देर बाद बाहर से बच्चों की आवाज़ें आनी शुरु हो गई. मुस्कान से रहा नहीं गया. उसने धीरे से खिड़की खोली और देखा कि उसके दोस्त पूरी तरह हरे, गुलाबी, नीले, पीले रंग में रँगे हुए थे. वे सब खूब मस्ती कर रहे थे और एक दूसरे पर पिचकारी से रंग डाल रहे थे.

मुस्कान खुशी से चिल्लाई-"अरे मम्मी देखो जरा निक्की को, कैसे घूम घूम कर सब के बालों में सूखा रंग डाल रही है!"

मुस्कान की बात सुनकर मम्मी वहाँ आई और रंग बिरंगे बच्चों की देखकर मुस्कुरा उठी.

मुस्कान अपनी ही धुन में चहकते हुए बोली-" और जरा बबलू को तो देखो, वो तो पूरा फव्वारे के पानी में डूब गया है. ओह, वे सब कितने मजे से छप-छप कर रहे है न?"

मम्मी ने मुस्कान को देखा और कहा-"पर तुम बाहर बिलकुल मत जाना. तुम्हें तो रंग पसंद ही नहीं है ना "

मुस्कान जैसे नींद से जागी और धीरे से बोली-" हाँ..मुझे भला रंग क्यों पसंद हो? मुझे तो रंग बिल्कुल भी पसंद नहीं है."

मुस्कान अब बिलकुल चुपचाप खड़ी हो गई. तभी उसके दोस्तों ने नाचना शुरु कर दिया

"अरे, ये गाने की आवाज कहाँ से आ रही हैं?" सोचते हुए मुस्कान ने झाँककर देखा.

"वाह...इन सबको को तो कितना मजा आ रहा है. रंग-बिरंगे पानी में कितनी मस्ती से झूम झूम कर नाच रहे हैं. मैंने ही जिद पकड़ रखी है कि होली नहीं खेलूँगी अब क्या करूँ...कैसे जाऊँ बाहर" मुस्कान ने सोचा

तभी पापा के हँसने की आवाज़ आई उसने पलटकर देखा तो दादा दादी मम्मी पापा सब एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की बधाइयाँ दे रहे थे.

उसे याद आया कि पिछले साल मम्मी ने प्यार से उसके गाल पर लाल रंग लगा दिया था तो वह चीख चीख कर रोई थी. उसके सभी दोस्त उसे कितनी देर तक मनाते रहे पर उसने उन्हें भी दरवाजे से ही लौटा दिया था. गोलू तो खिड़की के पास आकर बोला था-"आजा मुस्कान, होली खेलने में बहुत मजा आएगा" पर मुस्कान ने गुस्से में खिड़की बंद कर दी थी.

आज होली के दिन उसे एक भी दोस्त बुलाने नहीं आया और ना ही उसकी मम्मी ने उसे रंग लगाया. मुस्कान के आँखों में आँसूं आ गए. उसने सोचा अब गलती उसकी है तो माफी तो मांगनी ही पड़ेगी. आँसूं पोंछते हुए मुस्कान ने गुलाल की प्लेट उसमें से एक चुटकी गुलाल उठाया और दादाजी के गालों पर लगा दिया. दादा जी ने उसे प्यार से गले लगा लिया. बस फ़िर क्या था मम्मी-पापा दादी सबने मुस्कान को गुलाल लगाया और मिठाई खिलाई.

"मम्मी आपने मुझे माफ़ कर दिया ना.." मुस्कान ने धीरे से कहा

"मेरी इतनी प्यारी गोल मटोल मुस्कान से भला कोई नाराज भी हो सकता है क्या? मम्मी ने हँसते हुए कहा. मुस्कान ने तुरंत पूछा-"तो क्या मेरे दोस्त भी मुझे माफ़ कर देंगे?"

"हाँ, क्यों नहीं करेंगे भला.. ये लो अपनी पिचकारी" कहते हुए पापा ने एक खूबसूरत पीले रंग की पिचकारी मुस्कान को थमा दी और साथ ही रंगों से भरे कुछ पैकेट भी

मम्मी बोली-"जाओ, अपने दोस्तों के साथ जाकर होली खेलो"

"सच...पर पहले दरवाज़ा तो खोलो" मुस्कान ने कहा.

पापा ने हँसते हुए दरवाज़ा खोला और मुस्कान हवा की गति से बाहर फ़व्वारे के पास पहुंच गई. सभी रंगे पुते चेहरों में मुस्कान साफ-सुथरी खड़ी हुई थी. उसने गोलू को देखकर कहा- "मुझे कुछ कहना है."

"मैं समझ गया." मुस्कान की आँखों में तैरते आँसुओं ने जैसे सब कुछ बता दिया था

"कुछ मत कहो.. पहले तो ये तो लो." कहते हुए गोलू ने उस पर रंगों से भरी पिचकारी छोड़ दी.

बस फ़िर क्या था, सभी दोस्त उनके आसपास आ गए और उस पर रंगों की बौछार करने लगे. हमेशा रंगों को नापसंद करने वाली मुस्कान को आज रंग भले लग रहे थे बहुत भले..

रानी चिड़िया

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

उड़-उड़ जाती रानी चिड़िया
चीं-चीं शोर मचाती चिड़िया
पास हमारे कभी न आती
लेकिन मन हर्षाती चिड़िया.

चुन-चुन दाना खाती चिड़िया
दूर-दूर तक जाती चिड़िया
लेकिन थोड़ी-सी आहट में
काहे को डर जाती चिड़िया?

अन्न देख ललचाती चिड़िया
खाकर खुश हो जाती चिड़िया
मिहनत कर के तिनके लाती
सुंदर नीड बनाती चिड़िया.

मंज़िल करीब है

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

थोड़ा और हौसला रख,
बढ़ा कदम लक्ष्य की ओर.
मंज़िल क़रीब है तुम्हारे,
सौगात लिए आएगी भोर..

न घबराना कड़ी धूप में भी,
स्वेद कण बनेंगे मोती.
संघर्ष के बाद जीवन में,
जगमगाएगी सुख ज्योति..

विश्वास-दीप जलाकर ,
होंठों में रखना सदा मुस्कान.
मेहनत और साहस से,
मुश्किलें हो जाएंगी आसान..

नींद त्याग कर रातों की,
जो डटे रहते हैं कर्म पथ में.
ख़ुशियाँ उन्हीं के द्वार आती,
बैठ सफलता के रथ में.

मटुकनाथ की चोरी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

नीरज को पक्षियों से बहुत ज्यादा लगाव था. वह हमेशा अपने पिताजी से घर में कोई भी पक्षी पालने की जिद करता रहता था, पर उनके पिताजी बिल्कुल इसके पक्ष में नहीं थे. एक बार नीरज बाजार से एक मुर्गा खरीदकर ले आया. मुर्गा दिखने में बहुत सुंदर और तंदुरुस्त था. नीरज ने उनका नाम रखा 'मटुकनाथ'. वह मटुकनाथ का पूरा ध्यान रखता था. खाने पीने की कोई कमी नहीं होने देता था. कुत्ते बिल्ली से भी उसे बचाकर रखता था. एक दिन उनके माता पिता किसी काम से बाहर गए. वे मटुकनाथ और घर की देखरेख की जिम्मेदारी नीरज को सौंप कर गए. नीरज घर के कामकाज में लग गया और उसका ध्यान कुछ देर के लिए मटुकनाथ से हट गया. अचानक मटुकनाथ का ख़्याल आते ही वह, घर के पीछे के आँगन में गया. आँगन में मटुकनाथ को न पाकर वह बहुत चिंतित हो गया, इधर-उधर खोजने पर भी मटुकनाथ नहीं मिला. नीरज की आँखों से आँसू बहने लगे. अपने दोस्तों को उसने सारी बात बताई. सभी दोस्त मटुकनाथ को ढूँढनें की योजना बनाकर आस पास के घरों में गए. किसी भी घर में मटुकनाथ नहीं मिला. बच्चों को याद आया कि वे लोग तो छक्कन चाचा के यहाँ जाना ही भूल गए. सारे बच्चे छक्कन चाचा के घर में घुस गए. उनको देखते ही छक्कन चाचा चिल्लाने लगे, " अरे तुम्हारा मुर्गा मेरे घर में नहीं है, क्यों अंदर जा रहे हो तुम लोग?" ये सुनकर बच्चों का शक यकीन में बदल गया.

वे बोले, "चाचाजी हमने तो आपसे मुर्गे के बारे में पूछा ही नहीं फिर आपको कैसे पता?" सभी बच्चे भीतर जाकर सारे कमरे छान मारे, भीतर बहुत अँधेरा था. तभी 'कुकड़ूँ कूँ' की आवाज आई. आवाज सुनकर बच्चे उधर ही भागे. एक बड़ी सी टोकरी के अंदर, छक्कन चाचा ने मटुकनाथ को छुपा दिया था. टोकरी हटाकर नीरज ने उसे गोद में उठा लिया. वह मटुकनाथ को पाकर बहुत खुश हुआ. बच्चे मटुकनाथ को लेकर बाहर आये और छक्कन चाचा से बोले, " चाचाजी कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए." फिर सभी बच्चे मटुकनाथ को लेकर नीरज के घर आ गए.

तितली बड़ी सयानी है

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

तितली बड़ी सयानी है,
फूलों की दीवानी है.

खुश होती तो इठलाती,
बगिया की वो रानी है.

उसके पंख सुहाने से,
रंगों भरी कहानी हैं.

लड़ती नहीं कभी भी वह,
सीधी सरल सुहानी है.

सारे बच्चों की उससे,
लगता प्रीत पुरानी है.

फूलों के पीछे छुपती,
चतुराई की नानी है.

सज धज के जब भी आती,
कौन कहे अनजानी है.

तिरंगा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

पूरे भारत देश में, उड़े तिरंगा आज.
रंग-बिरंगा आसमाँ, हमको तुम पर नाज..
हमको तुम पर नाज, गीत खुशियों के गाते.
धरा हमारी शान, साथ झंडा फहराते..
झूमे-नाचे लोग, खुशी बिन रहे अधूरे..
आता है जब पर्व, होत है सपने पूरे..

लिए तिरंगा हाथ में, फहराते सब साथ.
भारत माँ के सामने, सभी झुकाते माथ..
सभी झुकाते माथ, नमन वीरों को करते.
हुए देश पर बलिदान, दुश्मन से लड़ते..
देश हुआ आजाद, फूल की बहती गंगा.
भारत बने महान, फहरता आज तिरंगा..

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

प्रवीण की परेशानी

आज अर्धवार्षिक परीक्षा का रिज़ल्ट मिला था, शिक्षक ने प्रवीण को बुलाकर उसे बताया कि वह दो विषयों में फेल हो गया है. ऐसा प्रवीण के साथ आज पहली बार हुआ था कि वह किसी विषय में फेल हो जाए. प्रवीण रुआंसा हो गया, उसे परीक्षाओं के पहले पापा की कही बातें याद आ रहीं थी. परीक्षाएँ शुरू होने से पहले पापा ने प्रवीण से पूछा था कि क्या उसने अपनी पूरी तैयारी कर ली है? तब प्रवीण ने थोड़ा झिझकते हुए कहा था कि, हाँ पापा मैं रोज आधा सुबह पढ़ लिया करूँगा और आधा रात के खाने के बाद पढ़ लिया करूँगा. पापा ने उसे समझाया भी था कि बेटा केवल परीक्षा के एक दिन पहले पढ़ लेने से सबकुछ पूरी तरह याद नहीं हो जाता, यदि हर दिन थोड़ा-थोड़ा पढ़ने की आदत बनाओगे तो तुम्हें परीक्षा के पहले सिर्फ एक बार

देखने की जरूरत होगी. प्रवीण को पापा की यह बातें सोचकर बहुत पछतावा हो रहा था. वह हर बार ऐसे ही पढ़ता था और अच्छे नंबर से पास हो जाता था. इस बार भी उसने ऐसा ही किया, यह सोचकर कि हर बार की तरह इस बार भी वह अच्छे नंबर से पास हो ही जाएगा. घर वापस जाते समय प्रवीण रोने लगा और यह सोचने लगा कि अब वो अपने मम्मी-पापा को अपना रिजल्ट कैसे बताएगा?

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम निचे प्रदर्शित कर रहे हैं.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' द्वारा पूरी की गई कहानी

दो विषयों में फेल हो जाने के कारण प्रवीण बहुत उदास हो गया था. वह जब घर जा रहा था तो रास्ते भर उसे पापाजी की बातें याद आ रही थीं कि अगर मैं उनकी बात मान कर रोज पढ़ाई करता तो रिजल्ट कुछ और होता. लेकिन अब सोचने से क्या होगा?

वह जब घर पहुँचा तो माँ घर पर थीं, पापा ऑफिस से नहीं आए थे. उसका मन किसी काम मे नहीं लग रहा था. माँ ने प्रवीण की उदासी भाँप कर उससे पूछा-'बेटा,आज तुम बुझे बुझे से लग रहे हो. क्या बात है?

'अनमने मन से प्रवीण ने माँ को अपना रिजल्ट दिखाया. रिजल्ट देखकर माँ ने कहा-'जैसे तुमने पढ़ाई की है उस हिसाब से रिजल्ट आया है,जिन दो विषय में तुम फेल हो गए हो उसकी अच्छे से तैयारी नहीं की होगी.'

मुझे पापा से डर लग रहे माँ, प्रवीण ने कहा. हिम्मत से काम लो बेटे कुछ नहीं होगा, माँ ने कहा.

शाम को जब पापा घर आए और उन्हें प्रवीण के रिजल्ट का पता चला तो वे उसे पास बुलाकर समझाते हुए बोले-' देखो बेटा मैंने तुम्हे पहले ही कहा था कि प्रतिदिन पढ़ने का एक टाइम टेबल बना लो, लेकिन तुम माने नहीं और अब परिणाम तुम्हारे सामने है. फिर ये उदासी क्यों? ये अर्द्ध वार्षिक परीक्षा थी, वार्षिक परीक्षा अभी बाकी है. सोच लो क्या उसकी भी तैयारी वैसे ही करनी है.

पापा की बात सुनकर प्रवीण का उदास चेहरा खिल उठा और उसने पापा से कहा नहीं पापा, वार्षिक परीक्षा में अभी काफी समय है, जिसकी तैयारी मैं आज और अभी से करना आरंभ करूँगा.

ये हुई न बात पापा ने हँसते हुए कहा.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

प्रवीण ने घर पहुँचकर रिजल्ट के बारे में मम्मी पापा को रोते हुए बताया -"मैं दो विषयों में फेल हो गया हूँ. आपकी बातों पर ध्यान नहीं देने के फलस्वरूप ऐसा हुआ है.मुझे क्षमा कर दीजिए."

पिताजी प्रवीण का रिजल्ट देखकर बहुत क्रोधित हुए लेकिन मम्मी ने उन्हें शांत कराया.

प्रवीण के चेहरे पर शर्मिंदगी दिखाई दे रही थी. मम्मी ने उसे शांतिपूर्वक समझाते हुए कहा कि बेटा तुम्हें पापा ने हर दिन थोड़ा थोड़ा पढ़ने को कहा था लेकिन तुम नहीं माने. इसीलिए तुम्हारा रिजल्ट ऐसा आया है.

जिस प्रकार गुल्लक में हर दिन एक-एक रुपए डालने पर हजार रुपये जमा हुए थे,और एक एक बूँद से घड़ा भरता है, उसी प्रकार थोड़ा-थोड़ा करके प्रतिदिन सभी विषय की पढ़ाई करनी होगी तभी तुम परीक्षा में अच्छे अंकों से पास हो जाओगे. अर्धवार्षिक परीक्षा में जो हुआ उसे भूल जाओ और वार्षिक परीक्षा की तैयारी करो.

प्रवीण ने विश्वास दिलाया कि वार्षिक परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करेगा. पापा की बातों को ध्यान में रखते हुए प्रवीण लगन से पढ़ाई में जुट गया. वार्षिक परीक्षा में प्रवीण ने सभी विषयों में अच्छे ग्रेड प्राप्त किए, अब वह पढ़ाई करने का सही तरीका समझ गया है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

टीचर जी! मुझे भी देखिए

मम्मी मैं कल स्कूल नहीं जाऊँगी. प्रिया ने अपनी मम्मी से कहा. अरे, क्यों? तुम तो कभी स्कूल नहीं छोड़तीं. फिर क्या हुआ? मम्मी ने पूछा.

बस ऐसे ही. मेरा मन नहीं है. प्रिया बोली.

चलो ठीक है. लेकिन कोई समस्या हो तो बताओ. क्या तुमने अपना होमवर्क नहीं किया है? मम्मी ने प्रश्न किया.

होमवर्क कुछ था ही नहीं. तो क्या करती?

प्रिया के स्वर में कुछ चिढ़ झलक रही थी.

अच्छा चलो ठीक है. एक दिन की छुट्टी अपने मन से मना लो. मम्मी ने अपनी सहमति दे दी.

अगले दिन प्रिया स्कूल नहीं गई. दिनभर इधर-उधर अपना समय बिताती रही. वैसे प्रिया कभी भी स्कूल नहीं छोड़ती थी,कभी बीमार हो तो बात अलग है. पढ़ाई में उसकी रुचि थी. पाठ्यक्रम

के अलावा भी किताबें पढ़ना उसे अच्छा लगता था. पर आज न जाने क्यों वह स्कूल नहीं गई. मम्मी को भी आश्चर्य हो रहा था.

शाम को मम्मी ने प्रिया से पूछा कि अगले दिन के लिए अपना स्कूल बैग तैयार कर लिया है या नहीं?

हाँ कर लिया है. प्रिया ने अनमने स्वर में उत्तर दिया.

मम्मी को लगा कि प्रिया का कल भी स्कूल जाने का मन नहीं है. जरूर कोई समस्या है. उन्होंने प्रिया से पूछा कि आखिर क्यों वह स्कूल नहीं जाना चाहती है?

अब प्रिया ने बताया कि स्कूल में आजकल उसका मन नहीं लगता है. शिक्षक अपना पूरा समय उन बच्चों को देते हैं जो पढ़ाई में कमजोर हैं. अर्धवार्षिक परीक्षा होने वाली है. मैं तो अपनी तैयारी पूरी कर चुकी हूँ, अब शिक्षक मुझसे कुछ पूछते भी नहीं हैं. मैं दिनभर स्कूल में खाली बैठी रहती हूँ, इससे मुझे बहुत बोरियत होती है.

अब इसके आगे आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और हमें माह की 15 तारीख तक ई-मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा पूरी की गई कहानियों में से चुनी गयी श्रेष्ठ कहानी किलोल के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी.

बेटियाँ

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

आज बेटे संग बेटियाँ,
भी पढ़ने जा रही हैं.
मानो किसान के खेत में,
फसल लहलहा रही है..

आज के समय में हर कहीं,
कार्यस्थल में बेटियाँ खड़ी हैं.
लड़कों संग लड़कियों ने हर,
मुकाम हासिल कर लिया है..

कल जो बोझ कहलाती थीं,
हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं.
तभी तो आज की लड़कियाँ,
घर व समाज को बदल रही हैं..

बेटियाँ दहलीज से गांव तलक,
अपने हाथों गाथा गढ़ रही हैं.
देश ही नहीं वे विदेश तलक,
अपनी शौर्य गाथा लिख रही हैं..

काला कौवा

रचनाकार- सोमेश देवांगन

सुनो मेरी बात लाला.
मैं हूँ कौवा काला..
प्यास से पड़ा पाला.
मुह में पड़ गया छाला..
इधर-उधर भटक रहा.
पानी के लिए तड़प रहा..
पास में घड़ा था पड़ा.
पानी था उसमें थोड़ा..
मेरा मन बड़ा घबराए.
पानी ऊपर कैसे आए..
पानी कैसे पिया जाए.
थोड़ा संघर्ष किया जाए..

कंकड़-कंकड़ डाला जाए.
पानी धीरे-धीरे ऊपर आए..
ठंडा पानी अब पिया जाए.
मन को शीतल किया जाए..
कविता हमको यह सिखलाए.
संघर्ष से फल मिलता जाए..

नटखट नन्ही

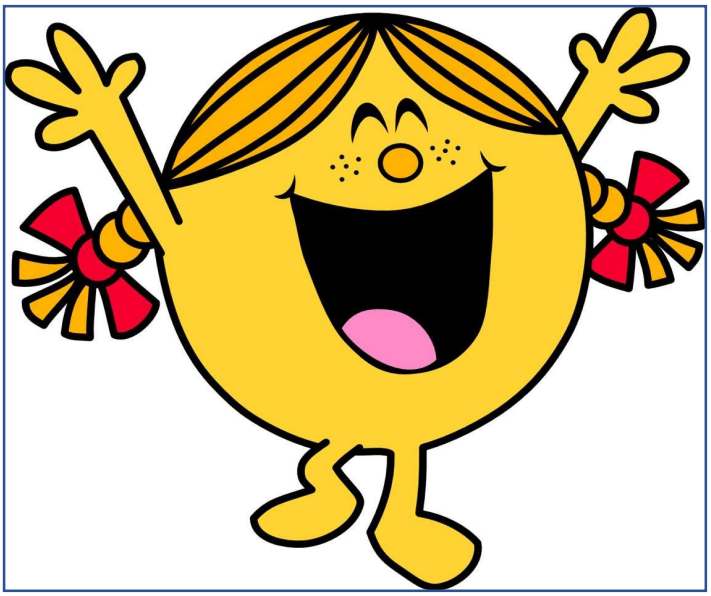

1. शिक्षक - तुम कैसे कह सकती हो कि हरी सब्जियाँ खाने से निगाहें तेज होती हैं?
   नन्ही - सर, मैंने आज तक किसी बकरे या घोड़े को चश्मा लगाए नहीं देखा है.

2. शिक्षक- आज स्कूल देर से आने का तुमने क्या बहाना सोचा है?
   नन्ही- सॉरी सर! आज मैं इतनी तेज दौड़कर आई हूँ कि बहाना सोचने का मौका ही नहीं मिला!

3. शिक्षिका- नन्ही तुमने जो माई डॉग निबंध लिखा है, क्या तुमने अपने भाई की नकल की है?
   नन्ही - नही मैम मैंने और मेरे भाई ने एक ही कुत्ते पर निबंध लिखा है।

4. शिक्षक- चोरी करना बुरी बात है, चोरी का फल हमेशा कड़वा होता है।
   नन्ही- लेकिन मैंने जो सेब चोरी करके खाया था वो तो मीठा था।

5. शिक्षक - चिंटू तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?
   चिंटू -सर, कल मैं सपने में अमरीका चला गया था.
   शिक्षक - और नन्ही, तुम क्यों नहीं आईं?
   नन्ही - सर, मैं चिंटू को एयरपोर्ट छोडने गई थी!

हिन्दी बोलो

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन "माटी"

हिन्दी सीखो हिन्दी बोलो, हिन्दी में सब काम करो.
आगे बढ़ते जाये हम सब, भारत का तुम नाम करो..

हिन्दी में हैं बावन अक्षर ,सब भाषा से न्यारी है.
मधुर सुहानी हिन्दी भाषा, हम सबको यह प्यारी है..

हिन्दी अपनी मातृभाषा है, इसका सब सम्मान करो.
आगे बढ़ते जाये हम सब, भारत का तुम नाम करो..

हुड़दंग करें

रचनाकार- प्रमोद सोनवानी 'पुष्प'

होली का त्यौहार है आया,
मिलकर हम हुड़दंग करें.
बेरंग है जिनका भी जीवन,
उस जीवन में रंग भरें..

अपने नन्हें से जीवन में,
भरे ख़ुशी का दौर हो.
कभी दुःख को जाने न हम,
सदा सुख का भोर हो..

चलो चलें हम छोटी को भी.
रंग लगाकर तंग करें..

दौड़ लगाकर उछले-कूदें,
जमकर शोर मचायें.
झूला डालें बगिया में हम,
झूल - झूल मौज मनायें..

बगिया में है जो सन्नाटा.
आज उसे हम भंग करें..

चुलबुली

रचनाकार- द्रोपती साहू "सरसिज"

चुलबुली बहुत प्यारी और सबकी लाडली.

सभी के साथ घुल-मिल जाती. कभी मम्मी के साथ रसोई में काम करने लगती. कभी कोई चीज़ धड़ाम..... से गिरा भी देती.

लेकिन प्यारी चुलबुली कहती-सॉरी मम्मी! मैं अभी सब ठीक कर देती हूँ.

मम्मी प्यार से समझाती-कोई बात नहीं बेटू, मैं कर लूँगी.

दिन भर यहाँ वहाँ डोलती रहती थी चुलबुली....

एक दिन की बात है कि चुलबुली देर तक सोई थी.

पापा ने बिस्तर के पास जाकर आवाज लगाई- चुलबुल, आज उठना नहीं है क्या?

चंचल चुलबुली कुछ सुस्त स्वर में बोली-आज मुझे अच्छा नहीं लग रहा है पापा.

पापा ने उसे गोद में उठाकर सोफे पर बिठाया. चुलबुली को बीमार देखकर घर के सभी लोग परेशान हो गए. डॉक्टर को बुलाया गया.

इसकी जीभ और आँखें को देकर तो लग रहा है कि इसे बहुत कमजोरी है. खाना ठीक से तो खाती है न? डॉक्टर ने पूछा.

चुलबुली की मम्मी ने उत्तर दिया कि- चुलबुली किसी भी सब्जी को ठीक से खाती ही नहीं, तो सब्जियों के पोषक तत्व इसके शरीर को कैसे मिलेंगे?

डॉक्टर ने कहा-भई! सब्जियों में बहुत सारे गुण होते हैं. इसी से हमारा शरीर मजबूत बनता है. अब तो चुलबुली को इंजेक्शन और दवाइयाँ देनी पड़ेगी.

यह सुनकर चुलबुली बोली नहीं-नहीं डॉक्टर अंकल. मैं आज से ही सारी सब्जियाँ अच्छी तरह से खाऊँगी.और तंदूरूस्त बनूँगी.

तब से चुलबुली इंजेक्शन के डर से फल सब्जियाँ अच्छी तरह खाने लगी. धीरे-धीरे वह स्वस्थ हो गई.

बन्दरों का शोर

रचनाकार- सोमेश देवांगन

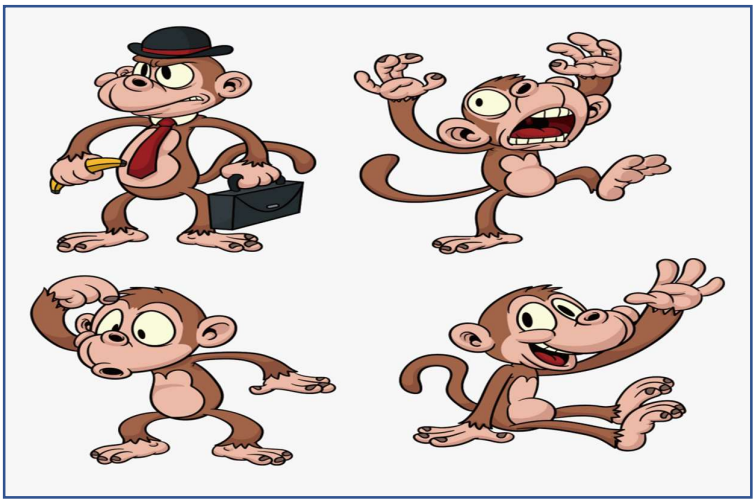

हम बंदर जाए किस ओर.
चिल्ला चिल्ला कर रहे शोर..

लगाएंगे हम अब अपना जोर.
नहीं हैं हम कुदरत के चोर.

हमे हमारा घर-बार चाहिये.
हरा-भरा पेड़ बहार चाहिये..

फल फूल वाला पेड़ चाहिये.
हमे हमारा घर-बार चाहिये

घर लूट लिए जंगल के पेड़ से.
पेड़ काट लिए खेत के मेड़ से..

हम तो हो गए घर से बेघर.
जायें भी तो जायें हम किधर..

पेड़ काट करते अपनी मनमानी.
हम बन्दर कल बन जायँगे कहानी..

भोजली पर्व

रचनाकार- विभा सोनी

छत्तीसगढ़ में सावन के महीने में मनाया जाता है. सप्तमी तिथि को छोटी-छोटी टोकरियों में मिट्टी डालकर अन्न के दाने बोए जाते हैं.भोजली नई फसल का प्रतीक होता है. इसे रक्षाबंधन के दूसरे दिन विसर्जित कर दिया जाता है और अच्छी फसल की कामना की जाती है. भोजली के सम्मान में भोजली सेवा गीत गाया जाता है यह गीत छत्तीसगढ़ की शान है. किसानों की लड़कियाँ अच्छी वर्षा एवं भरपूर भंडार देने वाली फसल की कामना करते हुए आयोजन करती हैं. भोजली हमारे स्वास्थ्य की कई परेशानियों को दूर करती है. भोजली पर्व हमारे छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत है. छत्तीसगढ़ का यह त्यौहार किसानों के मन में नए जोश और ऊर्जा का संचार करता है. भोजली दोस्ती भी होती है. एक दूसरे के कान में भोजली खोंचकर एक दूसरे से दोस्ती करते हैं. इसे भोजली बदना कहते हैं.पूरी जिंदगी इस मैत्री के सूत्र में बँधने का वादा करते हैं.भोजली देकर बड़ों को प्रणाम किया जाता है छत्तीसगढ़ की संस्कृति में भोजली का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है.

बर्फ

रचनाकार-डॉ.अखिलेश शर्मा

बिखरी पड़ी बर्फ की चादर
नैनाभिराम दृश्य चराचर
किरणें उसको चमकाती हैं
चाँदी सी फिर पसराती है.

देख उसे मन होता शीतल
भरा है उसके भीतर जल
धूप मचलकर नृत्य दिखाती

वसंत बहार हैं बच्चे

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

जीवन का प्रमुदित प्यार हैं बच्चे.
उत्साह नवल सत्कार हैं बच्चे..

मधुरिम हास्य का उपहार बाँटत.
सरिता का कलरव, धार हैं बच्चे..

आँखों में शुभ इंद्रधनुष तैरते.
अम्बर अनंत विस्तार हैं बच्चे..

खुशियों का मकरंद नेह लुटाते.
मधुमास वसंत बहार हैं बच्चे..

मानव मूल्यों के सबल संवाहक.
शुभ संस्कृति के आधार हैं बच्चे..

हर दिवस उत्सव पावन बन जाता.
उल्लास, उमंग, उजियार हैं बच्चे..

नोनी बेटी

रचनाकार- सोमेश देवांगन

बहुत भाग मानी हन वो नोनी के दाई.
हमर घर जनम ले हवय लक्ष्मी माई..

नोनी के आये ल मोर घर जगमगात हे.
घर हर लगय मंदिर घर हर ममहात हे..

घर में लछमी आये पाँव ओखर पखार.
मोर नोनी के आये ल रोज लगय तिहार..

जनम ले के तय आये नोनी हमर घर-बार.
मोर नोनी बेटी कुल दिए तय हमर तार..

दुनिया म नई हवय मोर असन भागमानी.
का पून के परसाद दिए हवस मोर भवानी..

पढ़ा-लिखा के मोर बेटी सब सुख तोला देवाहूँ.
मोर बेटी के कन्यादान कर के सरग मय जाहूँ..

पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

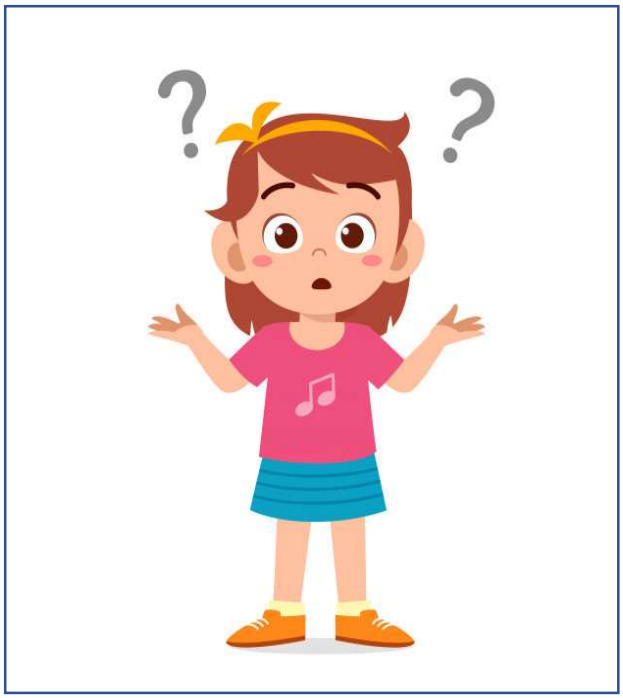

1

तीन भुजा इतराती आईं
जुड़कर बच्चों क्या कहलाईं?
तीन कोण भी बच्चों उसमें,
तीन शीर्ष है उस आकृति में.

2

सर्दी आए मुझको पाओ,
सर्दी, जुकाम सब दूर भगाओ.
अंग्रेजों की खोज निराली,
चुस्ती-फुर्ती देने वाली.

3

चार खंभे दिखे समान,
उनके बीच के कोण समान.
90 अंश के कोण बनाते,
बोलो बच्चों क्या कहलाते.

4

तीन नदियों का मेल निराला,
उससे निकली न्यारी धारा.
उस धारा का नाम बताओ,
तभी बच्चों टॉफी पाओ.

उत्तर:- 1. त्रिभुज, 2. चाय, 3. वर्ग, 4. संगम

गुलाब

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

डाल डाल पर लगी हुई थी.
सुंदर-सी गुलाब की कली..
खुशबू चारों ओर बिखेरती.
गुलाब की नन्ही-सी कली..

तितली उसके पास है आती.
नन्ही कली पर बैठ जाती..
रस उसका संग लेकर.
पेट अपना भरती..

फूलों पर बैठ तितली.
मन की बात बताती..
नन्ही कली को दोस्त बना.
आसमान में उड़ जाती..

जैसे कुँवर कन्हैया

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

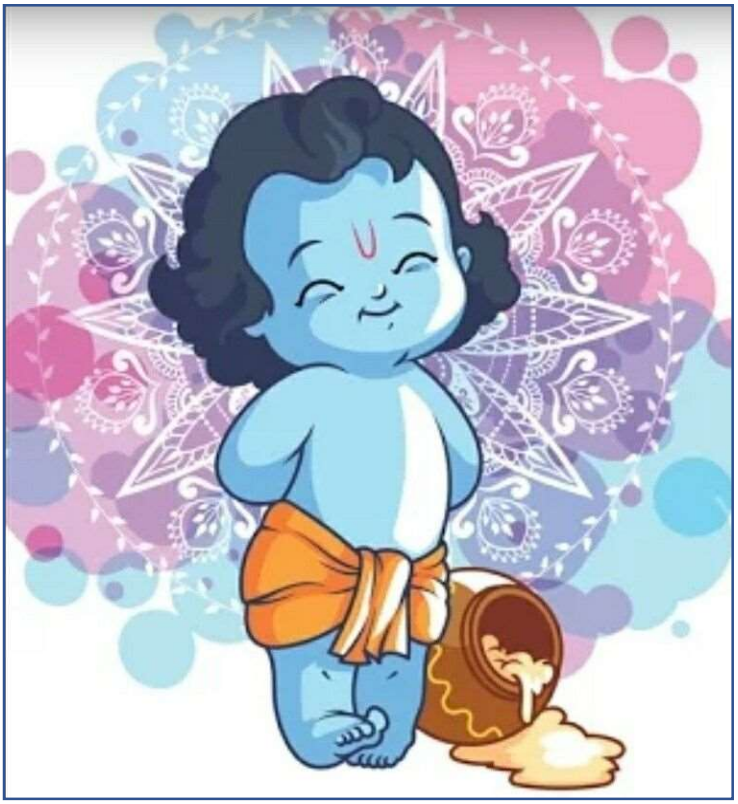

मेरे प्यारे भैया,
जैसे कुँवर कन्हैया.
मेरे भैया सो जा,
सपनों में तू खो जा.
नन्ही परियाँ आएँगी,
मीठे गीत सुनाएँगी.

दीदी तुझे सुलाती है,
मीठी लोरी गाती है.
परियाँ तुझे सजा कर के,
पंखों में बैठा कर के.
दूर देश ले जाएँगी,
नभ की सैर कराएँगी.

चंदा प्यारे तारे,
होंगे पास तुम्हारे.
उन्हें देख हर्षाना,
मुझको भूल न जाना.
दीदी तू तो भोली है,
करती सदा ठिठोली है.
यह तो एक कहानी है,
तू तो सचमुच रानी है.

बेटियाँ

रचनाकार- प्रतिभा त्रिपाठी

सुंदर-कोमल कली बेटियाँ,
होती अक्सर भली बेटियाँ.
मत बाँधो पैरों में बंधन,
अंतरिक्ष को चली बेटियाँ.

कितना मीठा मन रखती हैं,
ज्यों मिश्री की डली बेटियाँ.
हर बाधा सह जाती हैं,
संघर्षों में पली बेटियाँ॥

जीवन की अनमोल धरोहर,
घर की शान है बेटियाँ.
हर घर की लाज हैं बेटियाँ.
माँ-बाप का अरमान है बेटियाँ.

काँटों की राह पे चलकर,
फूल बोती हैं बेटियाँ.
सूरज है अगर बेटा,
तो चाँदनी हैं बेटियाँ..

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

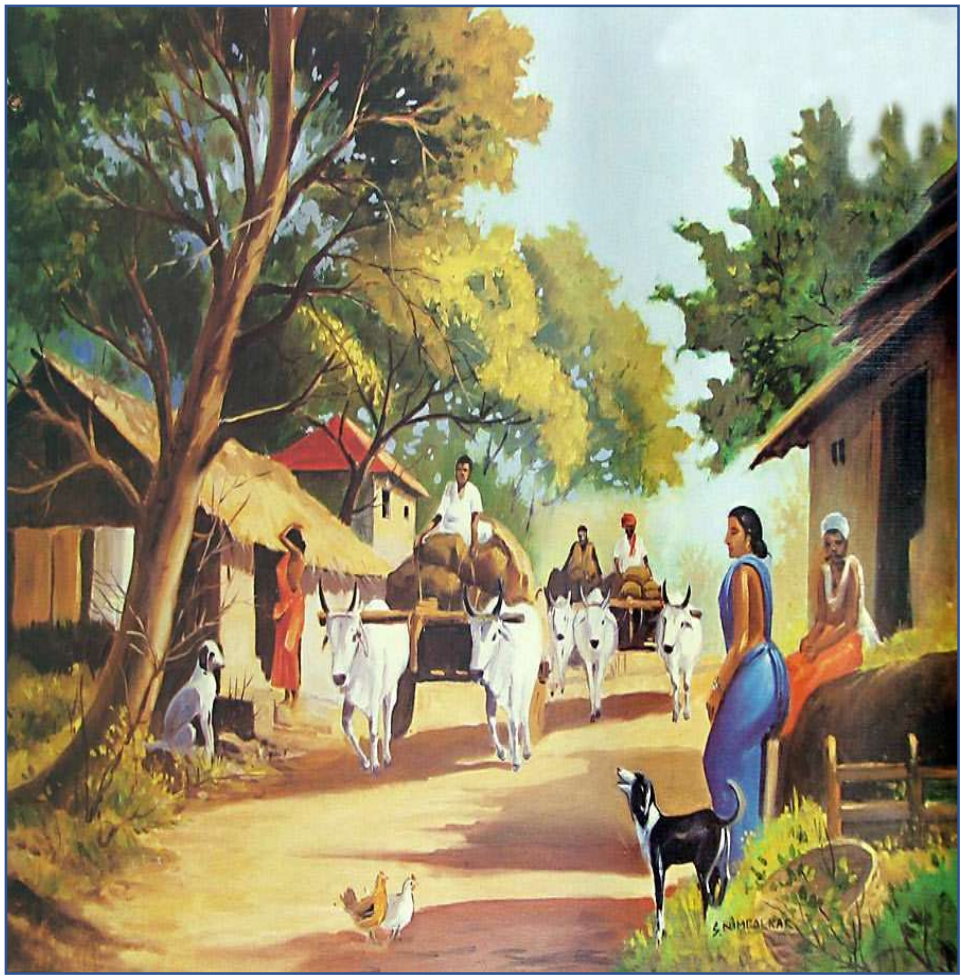

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

रोशन की डायरी

रोशन बचपन से ही शहर में पला बढ़ा है. पिताजी सरकारी सर्विस में शहर में ही पदस्थ हैं जिसके वजह से रोशन को गाँव जाने का मौका नहीं मिला था. गाँव के बारे में उसने पुस्तकों में ही पढ़ा था. लेकिन कुछ दिन पहले मामा के गाँव गया था वहाँ के अनुभव को अपनी डायरी में रोशन ने लिखा है.

मैं अपने मामा के साथ गाँव गया था. मुझे बहुत खुशी हो रही थी. गाँव शहर से बिल्कुल अलग लग रहा था. वहाँ का वातावरण शुद्ध, शीतल हवा, प्रदूषण से मुक्त, शोरगुल से मुक्त, प्रातः मुर्गे, गौरैया की आवाज, दोपहर में मिट्ठू की बोली, शाम को कोयल की कुहू- कुहू मन को भा रही थीं.

गाँव मे रहने वाले सभी लोग अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते थे, वे काम करने के बाद शाम को वापस आते तो अपने-अपने घर के पास बैठकर अपने पड़ोसी से सुख-दुख बाँटते थे. रात्रि में जल्दी भोजन करके सोना और सुबह जल्दी जागकर अपनी दिनचर्या में लग जाना उनका हर दिन का कार्य था.गाँव में प्राय:सभी घरों में गाय, बैल, कुत्ता पाले हुए थे. अपनी आय बढ़ाने के लिए घर में मुर्गी, कबूतर,बकरी पालन करते थे. उनके लिए शहर की तरह रहने की व्यवस्था नहीं था.

मुर्गी स्वयं अपने आसपास खाने की व्यवस्था कर लेती थी. गाँव के किसान अपने खेत का कार्य स्वयं करता था जिसमें बैल उनका सहयोग करता था. बैल के माध्यम से जुताई, बुवाई, गाड़ी खींचने का कार्य आदि होता था.

मुझे मामा के पड़ोस में रहने वाला आकाश नाम का दोस्त मिला जो मुझे हर दिन गाँव के अलग-अलग जगह घुमाता व उनके बारे में जानकारी देता था. हम लोग सुबह उठकर तालाब में स्नान करने जाते थे वहाँ मुझे मेरे दोस्त ने तैरना सिखाया, पेड़ पर चढ़ने का तरीका बताया था. वहाँ शहर की तरह फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल आदि नहीं थे. हम लोग कबड्डी, खो-खो, गिल्ली डंडा, नदी-पहाड़, डंडा-पचरंगा आदि खेलते हुए मस्ती करते थे.

एक दिन सुबह आकाश मुझे गन्ने की बाड़ी ले गया और उसने मुझे गन्ने की खेती के बारे में समझाया. वहाँ कुछ कृषक गन्ने से गुड़ बना रहे थे. उस प्रक्रिया को मैंने ध्यान से देखा और उसे समझा. कृषक गन्ना स्वयं उत्पादन करके गुड़ बनाते हैं और उसे बैलगाड़ी में रखकर बेचने जाते हैं. यह सब देख कर मैं बहुत हैरान था. गाँव के लोग बहुत मेहनती होते हैं लेकिन उनकी मेहनत के अनुपात में आय नहीं होती.

मेरा सपना है कि मैं बड़ा होकर किसान के सहयोग से शक्कर एवं गुड़ बनाने की फैक्ट्री लगाऊँगा ताकि गाँव वालों को रोजगार मिले एवं उनकी फसल का सही उपयोग किया जा सके.अंत में मैं कहना चाहता हूँ कि शहर की अपेक्षा गाँव बहुत बेहतर हैं. वहाँ मुझे सभी व्यक्तियों में प्रेम, सरल स्वभाव, ईमानदारी, सौहाद्रपूर्ण व्यवहार आदि नजर आया.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई-मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

शिक्षा

रचनाकार- रीता मंडल

जो ज्ञान का दीप फैलाता है.
वह तो शिक्षा है
जो दुर्गम को सरल बनाता हैं.....

जीवन में शिक्षा जरूरी है
जो हमें अधिकार का पाठ पढ़ाता है.
जो हमें कर्तव्यों का बोध कराता है
वह तो शिक्षा है
जो बुद्धिहीन को ज्ञानी बनाता है.....

जो हमें इंसानियत का पाठ पढ़ाता है,
भेदभाव, अंधविश्वास से हमें दूर ले जाता है.
अंधकार की दुनिया में जो ऊर्जा बनाता है
वो तो शिक्षा है
जो निरक्षर को साक्षर बनाता है.....

जान लो तुम यह बात,
जो अनपढ़ रह जाता है.
वो एक दिन पछताता है,
क्योंकि ज्ञान हमें जगाता है
शोषण से हमें बचाता है
वो तो शिक्षा हैं
जो बुद्धिहीन को ज्ञानी बनाता है.....

आलू पराँठा

रचनाकार- अनिता तोमर 'अनुपमा'

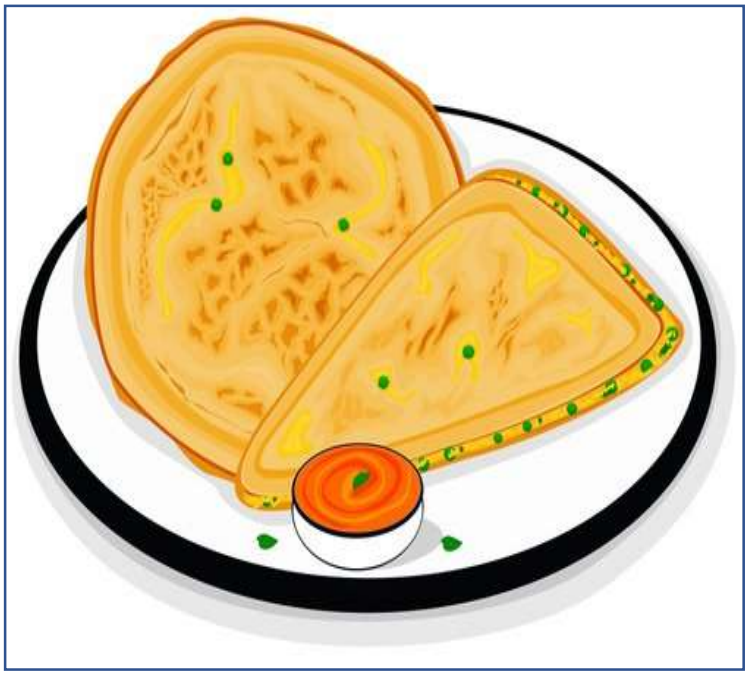

गरम-गरम आलू पराँठा
चुन्नु भैया को है भाता,
ढेर सारा मक्खन लगाकर
चटपट-चटपट पूरा खा जाता.

माँ और दादी हुई परेशान
कुछ और ना खाए ये शैतान,
गोभी, मटर, पालक ना भाए
हरी सब्जियाँ कैसे खिलाएँ?

मिन्नी दीदी ने उसे बुलाया
प्यार से उसे खूब समझाया,
हरी सब्ज़ी जो बच्चे हैं खाते
हर बीमारी को वो दूर भगाते

पताल चटनी

रचनाकार- हितेंद्र कोंडागंया

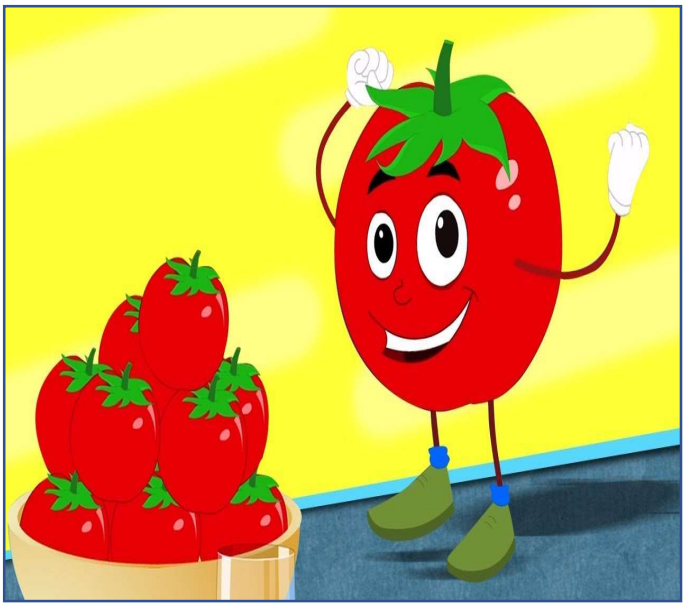

लाल पताल के चटनी सुग्घर
लाल भाजी अउ आलू के साग.
गुरतुर-गुरतुर गजब सुहावने
छत्तीसगढ़िया ल चाँऊर के भात
खावौ संगी ताते-तात.

आनी-बानी के खई-खजेना
रकम-रकम के चना-चबेना.
मैगी, पिज्जा बर्गर संगी
हाट-बजार ले झन तुम लेना.

अइरसा, पपची, ठेठरी-खुरमी
खावौ संगी सब जुरमिल.
मुठीया, लाटा करौंदा के चटनी
सुवाद लगा के खावौ अथान..

मेहनत का फल

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

मोहिनी सरकारी विद्यालय में कक्षा 4 की विद्यार्थी थी. वह अपने भाई को प्राइवेट स्कूल जाते हुए देखती तो उसका मन भी भाई के साथ पढ़ने जाने का हुआ करता था.

एक दिन उसने अपने मन की बात अपनी मम्मी से कह दी. मम्मी बोली-"अगर तुझे स्कूल भेज दिया तो तेरी छोटी बहन की कौन देख रेख करेगा.? तेरा नाम सरकारी विद्यालय में तो लिखा है. तू सरकारी स्कूल जाया कर.

कुछ दिन बाद मोहिनी की सहेली ने बताया कि स्कूल में दो और शिक्षक आये है. अब स्कूल आया करो. नए हेडमास्टर ने अभिभावकों की एक मीटिंग बुलाई और कहा "अब तक मैडम अकेले इस विद्यालय को देख रही थी लेकिन अब हम, राकेश जी और मैडम सहित तीन शिक्षक हो गए हैं. आप सभी अपने बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय भेजिए. हम आपके बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने की कोशिश करेगे और किसी ने कहा है कि कोशिश करने वालों की कभी हार नही होती है या तो सीख मिलती है या जीत मिलती है."

सभी अभिभावकों ने अपने बच्चों को भेजने का वादा किया." अगले दिन उपस्थित फिर भी कम रही.

हेडमास्टर ने पिछले साल और वर्तमान साल के उपस्थिति रजिस्टर से ऐसे बच्चों की सूची बनाई जो इस सत्र और पिछले सत्र में कम आये है. सरला मैडम ने बताया "सर, इस गाँव में मजदूर वर्ग ज्यादा हैं. परिवार के सभी सदस्य दिहाड़ी पर चले जाते हैं. छोटे बच्चों की यही बच्चे देखरेख करते हैं जो विद्यालय कम आते हैं."

हेडमास्टर ने कहा "हमे हर हाल में बच्चों की उपस्थिति बढ़ानी है.इसके लिए हमें व्यवस्था में परिवर्तन करना पड़ेगा."

अगले दिन हेडमास्टर समय से आधे घंटे पहले ही विद्यालय आ गए और अनुपस्थित पाँच बच्चों के घर गए. उन्होंने कारण वही पाया जो मैडम ने बताया था. तब तक विद्यालय का समय हो गया था.सभी बच्चों को एक साथ एकत्रित करके कक्षा वार दौड़ करा दी. दौड़ होने तक सरला मैडम और राकेश भी आ गए. बच्चों को पुरुस्कार के रूप में प्रधानाध्यापक ने एक एक पेन दिया.सभी बच्चे बहुत खुश हुए. ठंड के दिनों में बच्चों को यह अभ्यास अच्छा लगा. नए सर के साथ बच्चों को अच्छा लग रहा था.

धीरे -धीरे अनुपस्थित रहने वाले बच्चों तक नए सर के क्रियाकलाप पहुँचने लगे. अब बच्चों की उपस्थिति धीरे धीरे बढ़ रही थी. मोहिनी का मन भी स्कूल जाने को करने लगा.

हेडमास्टर ने प्रतिदिन 5 बच्चों के घर जाना जारी रखा. इसी क्रम में मोहिनी के घर भी गए. मोहनी के माता पिता से हेडमास्टर ने कहा -"आपकी बच्ची स्कूल कम आती है." उन्होंने मोहिनी को बुलाकर सामान्य ज्ञान के कुछ प्रश्न पूछे. सभी प्रश्नो के जबाब मोहिनी ने बिल्कुल सही दिए. हेडमास्टर ने कहा-"आपकी बच्ची तो बहुत होशियार है. पता चला है कि आपका बेटा प्राईवेट स्कूल जाता है. मैं यह वादा करता हूं कि अगर आप मोहिनी को स्कूल भेजते हैं तो मोहिनी अपने भाई से ज्यादा होशियार हो जाएगी,." "मोहिनी के पिता ने स्कूल भेजने की बात कही.

अब उपस्थित बढ़ रही थी.सातवाँ कालांश हैडमास्टर का था.उन्होंने सभी बच्चों को मैदान में आने को कहा. इस पर राकेश बोले "सर,गणित की कक्षा मैदान में क्यों? "हेडमास्टर ने कहा कि हर एक विषय को कहीं भी पढ़ाया जा सकता है.

अब हर दिन हेडमास्टर खेल खेल में पढ़ाने लगे.मोहिनी भी यदा कदा स्कूल आने लगी. हेडमास्टर ने अपने स्टाफ़ में चर्चा की-"अब बच्चो के उपस्थित ठीक चल रही है.अगर हमें और उपस्थित बढ़ानी है तो हर विषय मे रोचक क्रिया कलाप भी शामिल करने होंगे." स्टाफ-ने कहा "सर आपके क्रियाकलापों को देखकर हमारे अंदर भी ऊर्जा का संचार हो गया है.अब हम हर एक पाठ को क्रियाकलापों के द्वारा पढ़ाएंगे."

हेडमास्टर--"वो तो ठीक है पर अभी भी कुछ बालिकाएं जैसे मोहिनी स्कूल कम आ रहीं है. ऐसा करते है कि इन बच्चों के माता पिता की एक मीटिंग बुलाते है." अगले दिन मोहिनी सहित कई बच्चों के माता पिता स्कूल पहुँचे. हेडमास्टर ने मोहिनी के पिता से कहा आपने मोहिनी को रोज स्कूल भेजने का वादा किया था. मोहिनी की माँ --"सर, हम सब काम पर चले जाते है घर मे छोटे बच्चों की देखभाल तो यही करती है. फिर पढ़लिखकर ये क्या करेगी? ससुराल में चूल्हा चौका ही तो सँभालना है. "

हेडमास्टर--"अगर एक लडक़ी पढ़ती है. शिक्षित होती है तो पूरा समाज, पूरा परिवार शिक्षित होता है. अगर आपकी लड़की अनपढ़ रह जायेगी तो जीवन के हर राह पर कांटे है."

सभी लोगों ने वायदा किया कि अब हम बच्चियों को स्कूल भेजेंगे.

अब स्कूल का माहौल बिल्कुल बदल गया था. प्राइवेट स्कूल जाने वाले बच्चे भी सरकारी स्कूल में आ चुके थे. मोहिनी, नंदनी, नव्या, नवरत्न, पीयूष और गोपी ने लर्निंग ऑउटकम परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये. पाँचवीं कक्षा पास करके मोहिनी ,नंदनी ,और भव्या ने जवाहर नवोदय स्कूल की प्रवेश परीक्षा में भी अच्छे अंक प्राप्त किये.हेडमास्टर को अपनी मेहनत का फल मिल चुका था.

खाकर तुम्हें पचाना है

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

पप्पू भैया आओ जी
दूध जलेबी खाओ जी.

मम्मी लाई है समोसे
मूंग बड़े बढ़िया डोसे.

पर अधिक नहीं खाना है
खाकर तुम्हें पचाना है.

बचपन बड़ा प्यारा होता है

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

बचपन बड़ा प्यारा होता है,
हर दिल का दुलारा होता है.

खेलकूद में बीत जाते हैं दिन
जाने कब रात हो जाती है,
दादी की कहानी सुनते.
नानी की जुबानी सुनते,
दादा के ऊंगली थामकर
पूरे गाँव का भ्रमण करते.
मित्रों के संग नाचते गाते
जाने कब बड़े हो जाते हैं
बचपन बड़ा प्यारा होता है,
हर दिल का दुलारा होता है.

दोस्तों के संग अमराई में
राम्‌ काका के आम चुराते,
बेरियों के कंटीले झाड़ से.
खट्‌टे- खट्‌टे बेर है खाते,
खेत के पगडंडी से चलकर
स्कूल भी पढ़ने जाना है.
दोपहरी के धूप में जाकर,
चना चबेना भी खाना है.
दिन भर धमाचौकड़ी और,
जो रातभर चैन से सोता है
बचपन तो ऐसा ही होता है.

बचपन बड़ा प्यारा होता है,
हर दिल का दुलारा होता है.

हमारे प्रेरणास्रोत- अहिल्याबाई होल्कर

महारानी अहिल्याबाई इतिहास-प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव की पत्नी थीं. वे भारत के मालवा साम्राज्य की महारानी थीं. अहिल्याबाई का राज्य बहुत बड़ा नहीं था. उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित था. फिर भी उन्होंने जो कुछ किया, उससे हमें प्रेरणा प्राप्त होती है.

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के छौंड़ी ग्राम में हुआ. उनके पिता मंकोजी राव शिंदे, अपने गाँव के पाटिल थे.

इनका विवाह इन्दौर राज्य के संस्थापक महाराज मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडेराव से हुआ था. सन् 1745 में अहिल्याबाई के पुत्र मालेराव हुआ और तीन वर्ष बाद एक कन्या मुक्ताबाई हुई.. अहिल्याबाई की प्रेरणा से कुछ ही दिनों में अपने महान पिता के मार्गदर्शन में खण्डेराव एक अच्छे सिपाही बन गये. मल्हारराव पुत्र-वधू अहिल्याबाई को भी राजकाज की शिक्षा देते रहते थे.उनकी बुद्धि और चतुराई से वह बहुत प्रसन्न होते थे. मल्हारराव के जीवन काल में ही उनके पुत्र खंडेराव का निधन 1754 ई. में हो गया. अतः मल्हार राव के निधन के बाद अहिल्याबाई ने राज्य का शासन सम्भाला. रानी अहिल्याबाई ने अपनी मृत्यु पर्यन्त (1795 ई.)

बड़ी कुशलता से राज्य का शासन चलाया. उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है. वे अपनी उदारता और प्रजावत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं. उनका पुत्र मालेराव 1766 ई. में दिवंगत हो गया. राज्य की सत्ता पर बैठने के पूर्व ही उन्होंने अपने पति-पुत्र सहित अपने सभी परिजनों को खो दिया था इसके बाद भी प्रजा के हित के लिए किए गए उनके कार्य प्रशंसनीय हैं.

वह हमेशा अपने साम्राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियो से बचाने की कोशिश करती रहीं. युद्ध के दौरान वह खुद अपनी सेना में शामिल होकर युद्ध करती थीं. रानी अहिल्याबाई ने अपने साम्राज्य महेश्वर और इंदौर में काफी मंदिरो का निर्माण करवाया था. उन्होंने लोगो के रहने के लिए बहुत सी धर्मशालाएँ भी बनवायीं, ये धर्मशालाएँ उन्होंने मुख्य तीर्थस्थल जैसे गुजरात के द्वारका, काशी विश्वनाथ, वाराणसी के गंगा घाट, उज्जैन, नाशिक, विष्णुपद मंदिर और बैजनाथ के आस-पास ही बनवायीं. उन्होंने सोमनाथ में शिवजी का मंदिर बनवाया.

रानी अहिल्याबाई अपनी राजधानी महेश्वर ले गईं. उस दौरान महेश्वर साहित्य, मूर्तिकला, संगीत और कला के क्षेत्र में एक गढ़ था.

एक बुद्धिमान, तीक्ष्ण सोच और स्वस्फूर्त शासक के रूप मे अहिल्याबाई को याद किया जाता है. हर दिन वह अपनी प्रजा से उनकी समस्याएँ सुनती थीं. अपने साम्राज्य को उन्होंने समृद्ध बनाया. उन्होंने बेहद बुद्धिमानी से कई किले, विश्राम गृह, कुएँ और सड़कें बनवाने पर राजकोष का पैसा खर्च किया. वह लोगों के साथ त्योहार मनाती और मंदिरों को दान देती थीं.

अहिल्याबाई का मानना था कि धन, प्रजा व ईश्वर की दी हुई धरोहर स्वरूप निधि है, जिसकी मैं मालिक नहीं बल्कि उसके प्रजाहित में उपयोग की जिम्मेदार संरक्षक हूँ.

उनके राज्य में जाति भेद की कोई मान्यता नहीं थी व सारी प्रजा समान रूप से आदर की हकदार थी. इसका असर यह था कि अनेक लोग निजामशाही व पेशवाशाही शासन छोड़कर इनके राज्य में आकर बसने की इच्छा किया करते थे. अहिल्याबाई के राज्य में प्रजा पूरी तरह सुखी व संतुष्ट थी क्योंकि उनके विचार में प्रजा का संतोष ही राज्य का मुख्य कार्य होता है. अहिल्याबाई का मानना था कि प्रजा का पालन संतान की तरह करना ही राजधर्म है. वे शिव की अनन्य भक्त थीं, सारा राजकाज उन्होंने शिव की सेविका बनकर किया. वे राजाज्ञाओं पर अपना हस्ताक्षर न करके केवल श्री शंकर लिख देती थीं. रानी अहिल्याबाई ने भारत भर के प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में मंदिर बनवाए, कुएँ और बावड़ियाँ बनवाईं, मार्ग बनवाए भूखों के लिए अन्नक्षेत्र खोले,प्याऊ बनवाए और आत्मप्रतिष्ठा का मोह त्यागकर सदैव न्याय करने का प्रयत्न करती रहीं.

अहिल्याबाई ने जनकल्याण के लिए जो कुछ किया, वह आश्चर्यचकित करने वाला और चिरस्मरणीय है.

O Fagoon!

Poet:- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

O Fagoon !
Come on please ,
From North with breeze.
Stay here at any zone ,
Exactly not alone.
And spread the influence of
Lord Raama and Krishna ,
In the Heart of India.

O Fagoon !
Bring out the blue waves ,
Of a huge ocean's mouth ;
From the holy South.
Stay here at any zone ,
Exactly not alone.

And keep present the existance
Of the Peace piously ,
From Vivekanand's great stone.

So , please stay here at any zone ,
Exactly not alone ;
O Fagoon...! O Fagoon...!
Please... Come to my Great India.

क्या होते हैं शिक्षक

रचनाकार- शालिनीपंकज दुबे

क्या होता है
एक शिक्षक.....
जो बच्चों को पढ़ाते हैं
पढ़ाते हुए स्वयं भी पढ़ते और
सीखते हैं अभाव के बीच भी जीना
निश्छल होकर मुस्कुराना.
कितनी भी जदोजहद कर वो जब से स्कूल पहुँचते हैं,
लाख तनाव भी हो मन में ,सब छूमंतर हो जाते हैं.
वो बचपना जो व्यक्तित्व में कहीं दफ्न होता है.
दिल करता है कि बन बच्चा,बच्चों के बीच बैठ जाऊँ.
भूल जाऊँ कुछ पल को
कि...मैं कौन हूँ..?
दिल करता है
की उनकी हिंदी कविता की पंक्तियाँ
उनके साथ दोहराऊँ.

अवकाश के पल झूमकर इतराऊँ
दोनो हाथ पंछियों की तरह निकाल
मैदान का एक चक्कर लगाऊँ
हाँ शामिल होना चाहती हूँ
उनके खेलों में
वो कँचे को उँगलियों में फंसाकर मारना
मुझे आज भी आता है.
उनके सांस्कृतिक कार्यक्रम के अभ्यास में
कितने पद उन्हें सिखाते हुए
खुद भी कर जाना
औऱ उनकी तालियों के शोर से फिर वर्तमान में आ जाना.
उनके हँसी, खुशी,उदासी सब उनके साथ महसूस करना
जिस बच्चे का पिता नहीं है..
जिसकी माँ नहीं होती है.
जिस दर्द से एक बच्चा गुजरता है
उस दर्द को महसूस करना
कि शिक्षक के रूप में होकर भी छलक जाती है आँखे.
उनके नंगे पैर देखकर
नवरात्रि में खुद चप्पल न पहनना
की महसूस करना की
ये कंकड़ उन्हें कितने चुभते है.
हाँ भीगना बारिश में..
की बच्चे बहाने से भीगते हैं
ठंड में स्वेटर नहीं पहनना की
जानना ठंड बच्चों को क्यों नहीं लगती?
अंग्रेजी, हिंदी, बहुभाषा को कर किनारे
उनकी बोली बोलना
जो जोड़ती है उनसे
की घर-सा अपना स्कूल लगे
वो सब करते हैं एक शिक्षक...
जिसकी वजह बच्चों की मुस्कुराहट होती है.
कुर्सी, टेबल को छोड़ उनके बीच बैठ
किसी गतिविधियों को करना.
वो तमाम जतन करना

की उनका व्यक्तित्व निखरे.
उन्हें बिना बताए
उनकी हर समस्या हल करना.
बस एक कोशिश यही
की जैसे वो सब फेवरेट है मेरे.
उनकी फेवरेट मुझे बनना है.
की इंतजार रहता है आने वाले कल का..
कोई जीवन में एक मुकाम बना.
इस वर्तमान को दोहराएगा.
कोई बच्चा फिर जब शिक्षक बनकर आएगा.
दोहराएगा इस पल को
बच्चों के बीच फिर बच्चा बन जाएगा.
बेशक कल हम नहीं रहेंगे
हमारी सीख लिए ही
कोई फिर विद्यालय में आएगा
नए शिक्षक, नए विद्यार्थी
अतीत को समेटे यही शाला भवन वही रहेगा.
एक शिक्षक होता है भविष्य निर्माता.
डॉक्टर, इंजीनियर, वकील या व्यवसायी
एक अच्छा नागरिक
एक नेक इंसान
में कहीं न कहीं होती है गुरु की पहचान.

कँउआ बोलिस काँव-काँव

रचनाकार- विनयशरण सिंह

कँउआ बोलिस काँव-काँव,
सहर ले अच्छा लगथे गाँव.

चारों कोती खुल्ला-खुल्ला,
चिक्कन-चातर गली मुहल्ला.

हरियर-हरियर खेत अउ खार,
लीपे पोते घर दुआर.

हल्ला-गुल्ला भीड़ न भाड़,
चारों कोती झाड़े-झाड़.

एला छोंड़ के मैं नइ जाँव,
कँउआ बोलिस काँव-काँव.

गोवा के 14 वर्षीय लियोन मेंडोंका भारत के नये ग्रैंडमास्टर

रचनाकार- हेमंत खूटे

लियोन मेंडोंका आई एम टाइटल के बारे में पहले से जानते थे. इसलिए उन्होंने अपना सारा ध्यान आई एम टाइटल के लिए लगाया. काफी मेहनत की. अपने स्वाभाविक खेल के लिए विशेष लाइन तय की. ओपनिंग पर मजबूत पकड़ बनाई. सटीक गणना और अच्छी ट्यूनिंग के चलते किशोरावस्था में ही उन्होंने आई एम की उपाधि प्राप्त कर ली. उनके खेलग्राफ को देखने से पता चलता है कि 2018 में कुछ उतार चढ़ाव आये. रेटिंग प्रभावित भी हुई. मार्च 2018 में 2286 से कम होकर 1998 हो गई थी परंतु उन्होंने इससे विचलित हुए बिन पूरे आत्मविश्वास के साथ खेलना जारी रखा और मार्च के अंत तक बेहतर प्रदर्शन कर 350 पॉइन्ट की वृद्धि की.

मेंडोंका के कोच विष्णु प्रसन्ना ने कहा कि कई बार मेंडोंका रेटिंग हासिल करने के करीब पहुँचे थे और उन्होंने जरुरी अंक हासिल कर लिए. यह उपलब्धि आश्चर्यचकित करने वाली नही थी लेकिन फिर भी वे थोड़ा दबाव में थे. उनके अंदर गजब की प्रतिभा है.

ग्रैंडमास्टर बनने का सपना देखने वाले खिलाड़ियों के लिए मेंडोंका एक प्रेरणा हैं.

पूर्व विश्व चैंपियन विश्वनाथन आंनद ने ट्वीट कर अपने बधाई संदेश में कहा कि देश के 67 वें ग्रैंडमास्टर बनने पर मेंडोंका को बधाई. ग्रैंडमास्टर बनने का सपना देखने वालों के लिए आप एक प्रेरणा है.मुझे आपकी प्रतिबद्धता और एकाग्रता पर गर्व है. जी एम नार्म हासिल करने के लिए आपका परिवार और आप महामारी के दौरान जिस तरह यूरोप में रुके रहे उस पर गर्व है. इस उपलब्धि का आनंद ले.

मातु शारदे

रचनाकार-सीमांचल त्रिपाठी

मातु शारदे, मातु शारदे,
हमको ज्ञान व बुद्धि दे.
हम तो ठहरे अबोध बाल,
हमको ज्ञान का वर दे..

हम नादां ना कुछ जाने,
ज्ञान चक्षु का वरदान दे.
पर सेवा काम आए हम,
ऐसा तू हमको वरदान दे..

पद्म पुष्प निवासिनी,
कर तू वीणा धारणी.
विद्या-बुद्धि प्रदायिनी,
पुस्तक-हार धारणी..

मन का तम हटा ज्ञान,
की ऐसी बुद्धि तू भर दे.
हम तो नन्ही सी जान,
आगे बढ़ने का भान दे..

प्रकाश पुँज दिखाकर,
अज्ञानता को हर दो.
जीवन जगमग कर,
सुर ताल से भर दो..

मेरा गाँव

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

मेरा गाँव कब बसा यह तो पता नही पर अक्सर सब कहते हैं कि "पहले तो ये स्थान पूरा जंगल था शेर, भालु, चीते, सियार आदि जंगली जानवर भी रहते थे. धीरे-धीरे बसाहट थोड़ी सघन हुई लोग घर बनाकर रहने लगे. मुझे अच्छे से याद नही पर बड़े, बुजुर्ग अक्सर अतीत की स्मृतियों से कुछ खजाने निकालकर अक्सर हम बच्चों को दे देते.

भूत प्रेत के कुछ किस्से भी सुन रखे हैं, पर डर वाली कोई बात नही, क्योंकि भूत-प्रेत की बातें हमारे लिए सिर्फ मजेदार किस्से हुआ करते थे.

गाँव की कुछ धुंधली सी यादें हैं. कुछ विशेष अवसरों की, क्योंकि गाँव में रहना नही सिर्फ मेहमानी हमारे हिस्से में आई.

कितना कुछ होता है एक गाँव में नदी, खेत, तालाब, मन्दिर, बगीचा, खपरैल वाले घर, गोबर के कंडे से सजी दीवारें, घने पेड़, जंगल, मुर्गी के रंग-बिरंगे चूजे, बेलन, बैलगाड़ी और न जाने क्या-क्या?

बैलगाड़ी पर बैठना अद्भुत लगता था. पैरावट पर खेलना, छुपना व फिसलपट्टी की तरह फिसलना, पतली पगडंडिया, खेलते बच्चे, माँ धरती की गोद मे लोटते बच्चे, प्रकृति का खूबसूरत नजारा सब गाँव में ही तो है. जंगल से उठते धुएँ से मन विचलित हो जाता और वृक्षों की कुशलता की कामना लिए आँखे स्वतः बंद हो जातीं. हल्की बारिश हुई नही की मिट्टी की सोंधी खुश्बू हवा में घुल जाती है. वो त्यौहार की सभी यादें होली, दशहरा, दीवाली सब गाँव के किस्सों की ही तो हैं. फाग गीत, जस गीत से परिचय भी गाँव में ही हुआ था. रिश्ते इतने पक्के की कौन किसका सगा है पहचानना मुश्किल होता है. सटे हुए घरों की तरहः सब एक दूसरे के करीब हुआ करते.

बहुत कुछ है, गाँव की यादों में जो जेहन में अमर है.

बनाएँ रेल

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

मिलकर चलो बनाएँ रेल
बड़े मजे से खेलें खेल
नहीं करेंगे पेल-धकेल
छुक-छुक हम चलाएँ रेल.

दूर-दूर पहुँचाती रेल
मित्रों से मिलवाती रेल
कोक नहीं अब खाती रेत
धुआँ भी नहीं उड़ाती रेल.

मूर्ख कौवा

रचनाकार- महेंद्र कमार वर्मा

कौवे के मुँह में रोटी देखकर, सियार के मुँह में पानी आ गया. वह सोचने लगा कि किस तरह कौवे से यह रोटी हथियाई जाए. कौवे की तारीफ़ करके उसे गाने के लिए प्रोत्साहित करके वह रोटी नहीं पा सकता था. क्योंकि कौवा सियार का ये हथकंडा खूब समझता था. तब सियार ने एक नई तरकीब सोची और वह चल पड़ा कौवे के पास.

जुबान में मिश्री घोलते हुए सियार ने कौवे से कहा- "क्या तुम्हे पता है कि मेरे पास एक जादुई थाली है जिसमे मै किसी रोटी खाते कौवे को कैद कर सकता हूँ."

कौवा हँसा- "तुम झूठ बोलते हो अगर यह बात सच है तो दिखाओ वह जादुई थाल."

सियार ने दर्पण निकाल कर झटपट कौवे को दिखाया. कौवा दर्पण देख कर दंग रह गया. सचमुच उसे रोटी खाता कौआ दिखाई दिया. वह घबरा गया. सियार बोला-"कहो तो तुम्हे भी थाली में कैद कर दूँ."

कौवे ने घबराहट में रोटी फेंकी और बहाँ से भाग खड़ा हुआ.

सियार अपनी नई तरकीब पर मुग्ध होता हुआ मजे से रोटी खाने लगा.

पद का मद

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मिल जाता जब किसी को अचानक पद.
हावी हो जाता सिर पर यह पद का मद..

पद मिले तो नाम मिले,मिले खूब सोहरत.
बात करने फिर अपने से निकाल रहे महोरत..

महोरत निकाल करते धोखे से जी बात.
पल-पल में बताते ये पैसे कीऔक़ात..

पद का नशा चढ़े जिसे नशा से जाये फूल.
अभिमान करने लगे सबको जाए वो भूल..

कर रहा पराया सब को ये छोटा-सा पद.
सब नशा से भारी होता पद का यह मद..

पद आते ही चढ़ने लगे मैं की ये बुरी लत.
पद पाने पर कभी न करना मद ये मेरा मत..

माँ

रचनाकार- योगेश राजवाड़े

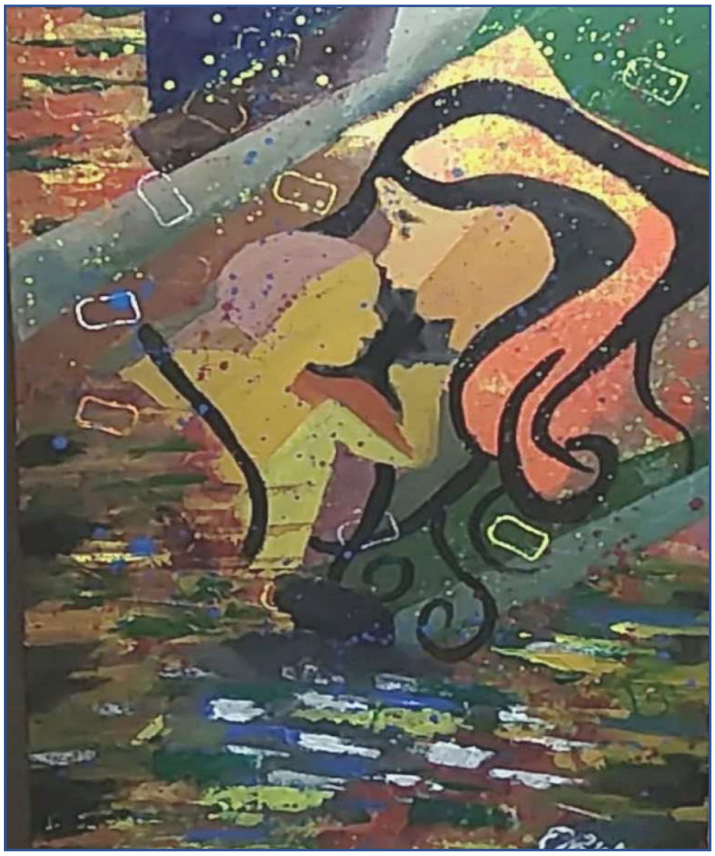

माँ तेरी यही कहानी,
तेरी दया बड़ी निराली.
अपनी कोख की छाया में, बड़ा किया,
लोरी गाकर सपनों का, संसार दिया.

जग है सोया, तू है जागी,
फिर भी कभी न थकी -हारी.
सुख-दुख सब झेल जाती,
मुझ पर आँच न आने देती.

उंगली पकड़ चलना सिखाया,
सत मार्ग का राह दिखाया.
माँ तेरी यही कहानी,
तेरी दया बड़ी निराली.

करुणा पाकर जग इतराया,
माँ ये तेरी कैसी माया.
अपने हाथों से खिलाया,
समय पड़ा तो हल चलाया.

मिला है तुझको रब का दर्जा,
करते सब सम्मान
नारी शक्ति तू है "माँ",
जग में बहुत महान..

मानवता का व्यवहार

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

आज हमारा देश स्वतंत्र है. इस स्वतंत्रता का श्रेय हमारे क्रांतिकारियों को जाता है. स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत 1857 में हुई थी. नानासाहब पेशवा, तात्या टोपे, मंगल पांडेय, बाबू कुँअर सिंह, रानी लक्ष्मी बाई और बेगम हजरत महल आदि अनेक क्रांतिकारियों ने स्वन्त्रता के संग्राम में अपने जीवन की आहुतियों दीं.

स्वतंत्रता संग्राम में सभी क्रांतिकारी तन मन धन से अपना योगदान दे रहे थे. स्वतंत्रता सेनानियों और लखनऊ के क्रांतिकारियों ने अँग्रेजों के लिए बढ़ी मुश्किलें पैदा कर दी थीं. बेगम हजरत महल के नेतृत्व में अनेक अँग्रेज सैनिको और अधिकारियों को बंदी बनाया जा चुका था.

आधी रात हो चुकी थी. बेगम जाग रही थीं. उनके मन मे कई योजनाएँ आ रही थी. तभी क्रांतिकारियों के सरदार दलपत सिंह ने प्रवेश किया. अभिवादन किया और बोले "बेगम हुजूर की आज्ञा हो तो बंदी बनाये गए अँग्रेज़ सैनिको और अधिकारियों के हाथ पैर काट कर अंग्रेजो के शिविर में फेंक दूँ."

बेगम हजरत महल बोली "बिल्कुल नहीं, हम बन्दियों के साथ ऐसा व्यवहार नही करते जिससे मानवता तार तार हो जाए. कैदियों पर जुल्म करना हमारे हिदुस्तान की संस्कृति नही है. लड़ाई अपनी जगह है और वीरतापूर्वक लड़ी जायगी. बंदी सैनिको, अधिकारियों और महिलाओं के साथ मानवता का व्यवहार किया जाएगा.

दलपत सिंह अपने शिविर लौट गए.

मेरा कलम

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मेरा कलम मेरा अभिमान और स्वभिमान.
आज बसन्त पर करूँ कलम का गुणगान..

देव रूप में मानु तुझको करूँ आज पूजा.
सबसे सच्चा मित्र आप हो नहीं कोई दूजा..

खुद चलते खुद जलते फिर भी नहीं घबराते.
स्याही रहे खून-सी तब तक मेरा साथ निभाते..

शब्दों को खून से अपने सींच के बढ़ाते मान.
कलम खून-सी स्याही का करूँ मैं क्या बखान..

मानू मैं कलम को अपना कृष्ण-सा सारथी.
वेद पुराण गीता मानू करूँ निश दिन आरती..

रंग-बिरंगे रूप तुम्हारे कलम लगे बहुत प्यारे.
मनभावन लगे बाँसुरी जैसे हो कृष्ण से साँवरे..

सफलता की कहानी- अब मुश्किल नहीं कुछ भी

बालिका का नाम-कु. भूमिका बघेल

माता का नाम- श्रीमती कामेश्वरी बघेल

पिता का नाम- श्री राजीम बघेल

कक्षा -पाँचवी

यह कहानी है बस्तर जिले के छोटे से गाँव पोटियावंड में निवासरत परिवार के सदस्यों की जो अपने बच्चों की पढ़ाई अनवरत रखने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं.

मार्च 2020 में जब कोरोना माहमारी के चलते सभी स्कूल बंद हुए, तब आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं को हॉस्टल से अपने घर आना पड़ा. ऐसी ही एक बालिका भूमिका बघेल कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय बालिका विद्यालय, बकावंड की कक्षा आठवीं में अध्ययनरत है. मार्च

से अब तक वह अपने परिवार के साथ अपने घर पर है लेकिन कभी भी भूमिका की पढ़ाई में कोई व्यवधान नहीं आया.

लॉकडाउन की शुरुआत में वह और उसके भाई किताबों से पढ़ाई करते थे, उन्हें समझने के लिए अपने शिक्षकों की कमी महसूस होती थी. लेकिन समाधान के उपाय समझ नहीं आते थे क्योंकि उस समय कोरोना संक्रमण से सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्कूल नहीं खोले जा सकते थे.

तब बच्चों की पढ़ाई को अनवरत जारी रखने के उद्देश्य से स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा "पढ़ई तुंहर दुआर" योजना चलाई गयी जिसके अंतर्गत बच्चों को ऑनलाईन क्लास के माध्यम से शिक्षा से जोड़े रखने की योजना बनायी गयी.

भूमिका को जब उनकी मैडम से पता चला कि स्कूल के द्वारा ऑनलाईन कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है, तो भूमिका ने भी उन कक्षाओं में शामिल होने की इच्छा जताई, लेकिन उस समय उनके घर पर स्मार्ट फ़ोन नहीं था जिसकी मदद से वह ऑनलाईन कक्षाओं से जुड़ सकती. तब भूमिका नें इस बारे में अपनी मम्मी से बात करने की सोची. भूमिका की मम्मी ने उस समय स्मार्ट फोन लेने से मना कर दिया. लेकिन भूमिका दृढ़ता से अपनी बात समझाने में लगी रही . भूमिका ने अपने माता पिता दोनों को अपनी जरुरत के बारे में समझाया साथ ही स्मार्ट फ़ोन मिल जाने से सभी भाई-बहनों को उनकी पढ़ाई जारी रखने में मिलने वाली मदद के बारे में भी बताया. भूमिका के बार-बार प्रयास करने से उनके माता-पिता मान गए और उन्होंने स्मार्ट फ़ोन खरीद कर अपने बच्चों को दिया. अब सभी बच्चे बारी-बारी से अपनी अपनी कक्षाओं में सम्मिलित होते हैं. बच्चों के समय का सही उपयोग होता हुआ देखकर उनके माता पिता भी बहुत खुश रहते हैं.

भूमिका कहती है कि "स्मार्ट फ़ोन खरीदने के लिए अपने माता-पिता को मनाना चुनौती भरा था, लेकिन इस कार्य में उसके द्वारा सीखी हुई जीवन कौशल की शिक्षा से उसे बहुत मदद मिली."

भूमिका कहती है कि उसने जीवन कौशल के जरिये समस्याओं को सुलझाने के साथ-साथ अपनी बातों को दृढ़ होकर स्पष्ट रूप से रखने का कौशल सीखा है, इसी कौशल के कारण वह अपने माता पिता को स्मार्ट फ़ोन खरीदने के लिए मना पाई. शुरुआत में स्मार्ट फोन को इस्तेमाल करने और ऑनलाईन कक्षा जॉइन करने, म्यूट अनम्यूट करने में बहुत समस्या होती थी, इसके लिए उसने अपने पड़ोस के जानकर लोगों के साथ ही अपनी मैडम से भी मदद ली". भूमिका को लगता है कि उसके लिए अब कुछ भी मुश्किल नहीं है.

भूमिका की माँ आंगनबाडी कार्यकर्त्ता के रूप में काम करती हैं. वह कहती हैं कि "अपने बच्चों की पढ़ाई बनाए रखने में वह हर संभव प्रयास करती हैं. लेकिन जब बात स्मार्ट फ़ोन खरीदने की आई तो उनके सामने आर्थिक समस्या के साथ-साथ स्मार्ट फ़ोन से होने वाले नुकसानों की भी चिंता थी. लेकिन भूमिका के नेतृत्व में सभी बच्चों ने उन्हें यकीन दिलाया कि वे अपने समय और स्मार्ट फोन की सुविधा का दुरूपयोग नहीं करेंगे, तब जाकर उन्होंने स्मार्ट फोन खरीदने की योजना बनायीं.

वे आगे कहती हैं कि भूमिका अब पहले से काफी समझदार हो गयी है वह बहुत ही अच्छे तरीके से अपनी बात रखने लगी है. भूमिका में आया यह परिवर्तन जीवन कौशल की शिक्षा के साथ-साथ उनकी शिक्षिका और अधीक्षिका मैडम से समय समय पर मिलने वाले मार्गदर्शन का प्रभाव है. भूमिका में हुए इस परिवर्तन को देखकर उन्हें बहुत खुशी महसूस होती है.

भूमिका की शिक्षिका श्रीमती संतोषी गायकवाड़ कहती हैं कि "जहाँ कुछ बच्चों ने परिस्थिति से हार मानकर प्रयास करना छोड़ दिया है और कक्षाओ में अनुपस्थित रहते हैं, वहीं भूमिका का स्मार्ट फोन खरीद कर पढ़ाई जारी रखने के लिए उठाया गया कदम अत्यंत सराहनीय है."

भूमिका की अधीक्षिका श्रीमती हेमलता ध्रुव , "भूमिका और उनके माता-पिता की इस सराहनीय पहल से बहुत खुश हैं. साथ ही वह दूसरी बालिकाओं और पालकों को भी इनसे प्रेरणा लेने की अपील करती हैं."

आना चिड़िया

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

सुबह-सुबह तुम आना चिडिया
मीठे गीत सुनाना चिड़िया.

उठने में गर देर हुई तो
आकर हमें जगाना चिड़िया.

भूख लगे तो रोना तुम मत
मम्मी को बतलाना चिड़िया.

भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्गपहेली)

रचनाकार - दीपक कंवर (शिक्षक)

1. पु		2. ई		3. पा	4.	■	5. च		6.
	■		■	7.	छिं		■	■	रू
	■		■	■	■	■	8.	9.	वा
■	10. पु		11.		12 ती	■	■	क	■
13 टु		■		■		■	■		■
	■	■		■	14. बे				
■	15. ब			■		■	■	■	■
■		■	■	16. बो	■	17. प		18.	
19. गो		20.	■		■		■		■
	■	21. गी					■	22. क	

बाएँ से दाएँ:- 1. कमल का पत्ता, 5. चैत, 7. स्वतंत्र, 8. भालू, 10. पुरखों से प्राप्त, 13. लड़का, 14. मजाकिया, हंसोड़, 15. बड़ा, 17. तरल पदार्थ मे आवश्यक सामग्री कम होना, 19. गुहार, दुहाई 21. चमगादड़, 22. ओला।

ऊपर से नीचे:- पत्तों से ढंककर आग मे भुना गया व्यंजन, 2. रविवार, 3. पीछे, 6. तालू, 9. लुकाछिपी का खेल, 10. बाढ़, 11. जानवरों का झुंड, 12. तिराहा, 13. मांस का छोटा टुकड़ा 15. पागल, 16. एक भाजी का नाम, 17. टमाटर, 18. खिसक, 19. पैर, 20. बादल छटना।

पिछले भाखा जनऊला का उत्तर

1 घ	र	2 गूं	दे	3 लि	चा	■	4 क	ल	5 गी
र	■	गु	■	मा	■	6 घा	■	■	ध
7 र	वा	र	■	8 न	9 ग	म	10 त	■	र
क्खा	■	धु	■	■	रु	■	11 र	व	ई
■	12 ख	प	13 रा	■	आ	■	पं	■	ल
■	र	■	14 पा	15 रा	■	16 बैं	वा	रा	■
17 न	ख	■	■	न्धे	■	द	■	■	
■	18 स	19 ना	य	■	■	20 रा	है	21 र	■
22 बो	हा	र	■	23 झा	■	■	■	24 खि	ला
रीं	■	■	■	25 र	म	कै	ली	या	■